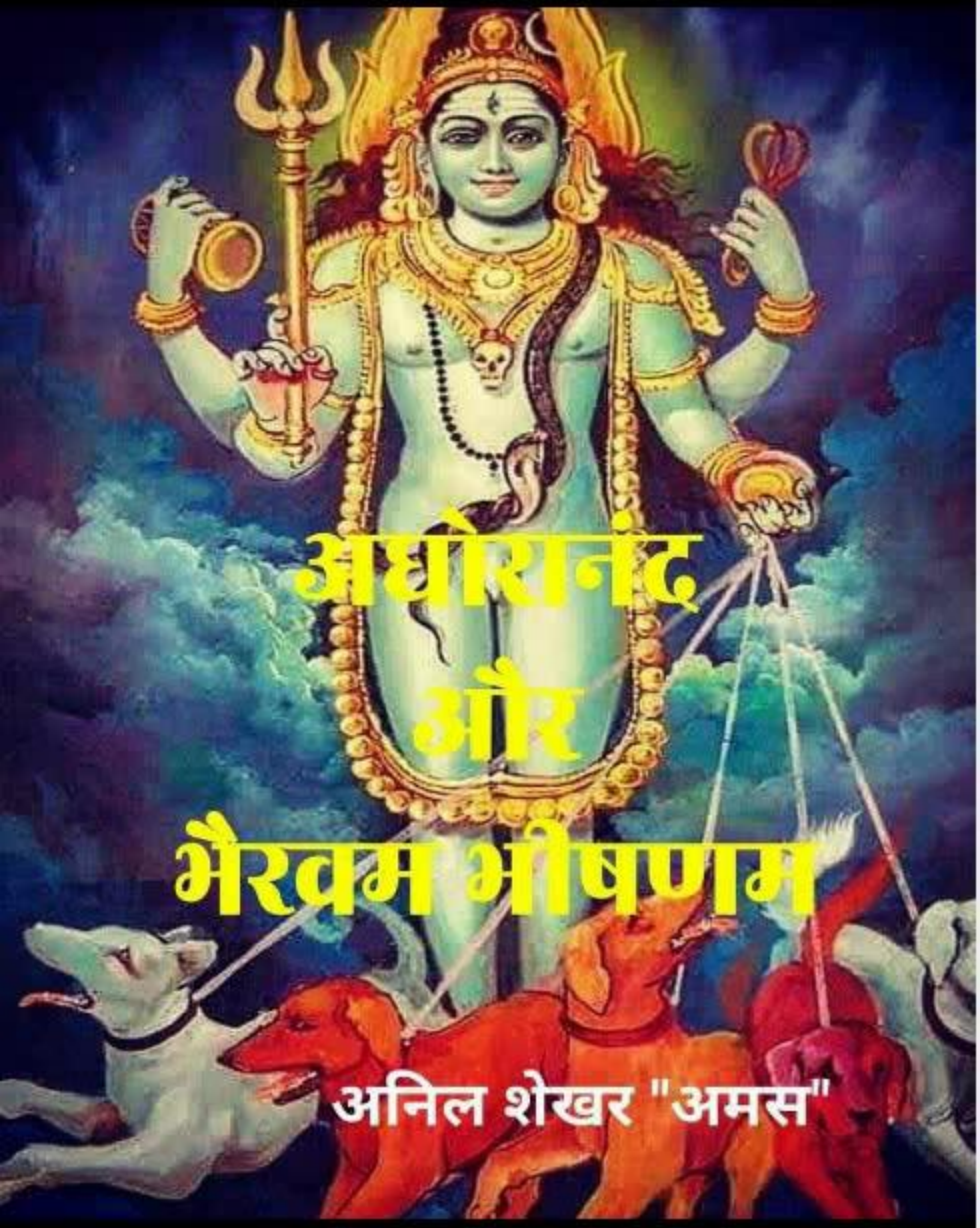
अघोरानंद
और
भैरवम भीषणम
अनिल शेखर "अमस"

भैरवम भीषणम

सभी पाठकों का हृदय से अभिनंदन

मेरी अन्य कथाओं की तरह यह भी तंत्र साधना के क्षेत्र में मेरी एक काल्पनिक कथा है ।
इनमें दी गई जानकारियां तथा मंत्र प्रामाणिक ग्रंथों में दिए गए मंत्रों से भिन्न भी हो सकते हैं । अलग अलग साधकों और गुरुओं के द्वारा एक ही साधना के लिए अलग-अलग प्रकार के मंत्र दिए जा सकते हैं । यह गुरु या संबंधित साधक की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपने शिष्य को कौन सा मंत्र प्रदान करता है ।

उदाहरण के लिए भैरव साधना घोर तामसिक रूप से श्मशान में की जा सकती है तो घर में बैठकर पूर्णत सात्विक रूप से भी की जा सकती है । इसमें तांत्रिक मंत्रों का प्रयोग हो सकता है । बीज मंत्रों का प्रयोग हो सकता है तो साबर मंत्रों का भी प्रयोग हो सकता है । कुल मिलाकर मेरे यह सब बताने का सार यह है कि साधनाओं का क्षेत्र जटिल होता है और भैरव साधना

जैसी उग्र साधनाएं गुरु के सानिध्य में की जानी चाहिए । इसलिए इसमें से किसी भी साधना को स्वयं करने की कोशिश तब तक न करें जब तक किसी अनुभवी साधक का सानिध्य आपको प्राप्त ना हो ।

इसे तंत्र साधनाओं के विषय में जानकारी देने वाली एक रोचक काल्पनिक कथा की तरह पढ़े और उस का आनंद लें.....

बाकी गुरु इच्छा .....

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

भैरवम भीषणम

भूमिका

भैरवम भीषणम

पारद विग्रह

भोलाराम जी

बारिश और चाय की दुकान

भगवान भैरवनाथ

भैरव साधना और हमारी चौकड़ी

प्रतिपदा का दीप स्थापन

पहली रात

वह भयानक आकृति

अगली सुबह की चर्चा

तीसरी रात

चाय पर चर्चा

चौथी रात

पाँचवीं रात और कड़कती बिजली

भोलाराम जी का गुप्त साधना कक्ष

भोलाराम जी की त्रिपुर सुंदरी साधना

गुरु शिष्य संबंध

जिह्वा मे सरस्वती स्थापना

आरती और वह नृत्य

वह रहस्यमय युवती

नवमी की रात्रि

पूर्णाहुति का कार्यक्रम

अन्य रचनाएँ :-

भूमिका

तंत्र साधना में और किसी भी प्रकार के पूजन में भगवान शिव के स्वरूप भैरव की पूजा अनिवार्य मानी जाती है । भैरव उग्र देवता है । उनका पूजन तथा ध्यान अपनी रक्षा के लिए तथा पूजन की रक्षा के लिए किया जाता है ।

जैसा कि आप लोग जानते हैं कि जब भी हम किसी व्यक्ति को अपनी सुरक्षा में लगाते हैं तो ऐसा व्यक्ति चुनकर लगाते हैं जो शारीरिक रूप से हमसे ज्यादा ताकतवर हो ....

जिसको देखकर सामने वाले को स्वयं भय का एहसास हो....

भगवान भैरव का स्वरूप भी वैसा ही है .....

वह विशालकाय शरीर के स्वामी है और उनकी आंखों में अत्यंत तीक्ष्ण तेज होता है ... जिसे देखने मात्र से व्यक्ति भयभीत हो सकता है ..... इसलिए कमजोर हृदय वाले महिलाओं और बच्चों को भैरव साधना न

करने की हिदायत दी जाती है ..... वे साधक का अहित कुछ नहीं करते हैं लेकिन उनका स्वरूप इतना विकराल है कि उसे देखकर साधक भयभीत हो सकता है .....

इसलिए मेरी यह व्यक्तिगत राय है कि कमजोर हृदय वाले पुरुषों को महिलाओं को और छोटे बच्चों को भैरव साधना नहीं करनी चाहिए यदि कोई व्यक्ति भैरव साधना करना चाहता है तो उसे भैरव साधना किसी अनुभवी साधक के या गुरु के सानिध्य में करनी चाहिए । बाकी महामाया की माया वही जाने.....

भैरवम भीषणम

मैंने अपनी पहली रचना तांत्रिक अघोरानंद में लिखा था कि 16 वर्ष की आयु में मुझे गुरु दीक्षा प्राप्त हो चुकी थी ... और उसके बाद थोड़ा बहुत मंत्र जाप इत्यादि मेरा चलता रहता था..... किशोरावस्था और युवावस्था के समय शरीर और मन दोनों में बल भी होता है और उत्साह भी ..... मैं भी साधना के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानने के लिए उत्सुक रहा करता था..... क्षेत्र में साधना के जानकार लोग थे उनसे मैं बीच-बीच में मिला करता ..... इनमें से कुछ मेरे गुरु भाई भी थे । कुछ साधक ऐसे थे जो केवल गुरु मंत्र जाप करते थे और कुछ अलग-अलग प्रकार की साधनाएं करते रहते थे । जिस साधक को किसी साधना के दौरान कोई विशेष अनुभव हो जाता या उसके द्वारा कोई विशेष कार्य संपन्न हो जाता तो वह अपने आप को सिद्ध साधक समझने लगता है .... तंत्र साधकों के साथ एक सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि उनमें अहंकार बड़ी जल्दी आता है .... उसे बाकी साधक और मनुष्य कीड़े मकोड़े लगने लगते हैं .....

यही अहंकार उसकी साधना को धीरे-धीरे समाप्त कर देता है .....

सभी साधकों को इससे बचने की कोशिश करनी चाहिए.....

जैसे-जैसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है साधकों को विनम्र होना चाहिए ..... ठीक किसी पेड़ की तरह जिसमें फल लगने के साथ उसकी डालियां स्वयं झुकने लगती है ....

यह प्रकृति के द्वारा दी जाने वाली सबसे बड़ी सीख है जिसे हम को समझना और जीवन में उतारना भी चाहिए...

इसी क्रम में एक साधक भोलाराम जी से मेरी मुलाकात हुई । उस समय मेरी आयु यही कोई 20 22 साल रही होगी ...

उस समय हम तंत्र साधकों का एक ग्रुप था । उसमें हम आपस में एक दूसरे से इस संबंध में चर्चाएं किया करते थे । उन साधकों में से एक व्यक्ति रमाशंकर जी भी थे

जिन्होंने पारे को ठोस करके शिवलिंग बनाने की प्रक्रिया कुछ रसायनों के माध्यम से कर ली थी ।

पारद विग्रह

तंत्र साधना में पारा एक अलग ही स्थान रखता है । पारे को अंग्रेजी में मरकरी कहते हैं .....

पारा इस विश्व में एकमात्र ऐसी धातु है जो द्रव अवस्था में है । जिसे अंग्रेजी में लिक्विड स्टेट कहते हैं । पारा अपने विशेषताओं की वजह से बाकी सारी धातुओं से अलग है । यह अधिकांश धातुओं के साथ मिलकर एक घोल जैसा बनाता है जिसे अमलगम कहते हैं । इसकी एक और विशेषता यह है कि अगर आप सोने को पारे से स्पर्श करा दें तो वह पूरा सोना पारे के अंदर समाहित हो जाता है । जिसे स्वर्ण भक्षण कहा जाता है....

एक खतरनाक बात यह है कि पारा एक अत्यंत जहरीला पदार्थ है । अगर पारे को कोई व्यक्ति खा ले तो उसकी नसों की दीवालें फट जाती हैं । उनसे फट कर खून बाहर निकलने लगता है और वह कुछ ही समय में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है.....

इस पारे के शुद्धिकरण की विदया को पारद विद्या कहते हैं । पारे को शुद्ध करने की क्रिया को पारद संस्कार

कहते हैं और ऐसे 108 संस्कार होते हैं । जिनके विषय में बहुत कम आयुर्वेदाचार्य या तांत्रिकों को जानकारी है ।

आयुर्वेद में लगभग 8 संस्कार संपन्न होने के बाद पारे के द्वारा विभिन्न प्रकार की औषधियां बनाई जाती है ।

उदाहरण के लिए सिद्ध मकरध्वज वटी एक सामान्य आयुर्वेदिक औषधि है । जो लगभग हर आयुर्वेदिक दवा दुकान पर मिलती है । इसमें एक प्रमुख अंश पारे का भी होता है ।

यह बात सुनने में थोड़ी अजीब लग सकती है लेकिन यह सत्य है कि वही जहरीला पारद इन संस्कारों के द्वारा इतना जागृत और चैतन्य हो जाता है कि उसके द्वारा विभिन्न बीमारियों का इलाज किया जा सकता है .....

अब क्योंकि पारा जहरीला है । इसलिए उसे संस्कारित करने के दौरान सावधानी रखना भी जरूरी होता है । इस दौरान निकलने वाला धुआं आंखों में पड़ जाए तो आंखों की रोशनी जा सकती है और व्यक्ति अंधा भी हो सकता है । खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन से

पारद संहिता नामक लगभग 1000 पेज की एक पुस्तक इस विद्या पर प्रकाशित है । जिसे मैंने पढ़ा हुआ था । इसलिए इतनी जानकारी मुझे है । और कुल मिलाकर मुझे ऐसा लगा कि यह क्षेत्र बहुत ज्यादा खतरनाक है और इसमें गड़बड़ होने के चांसेस ज्यादा है.....

इन सब कारणों से पारद विज्ञान में रुचि होने के बावजूद मैंने कभी कोशिश नहीं की । रमाशंकर जी इस फील्ड मे काम कर रहे थे ।

एक बार रमाशंकर जी मुझे अपने साथ अपने प्रयोगशाला में भी लेकर गए । वह शहर से थोड़ी दूर एकांत में स्थित था । वहां पर एक छोटी सी भट्टी उन्होंने बना रखी थी । साथ ही लोहार लोगों के पास हवा मारने की जो मशीन होती है वैसी मशीन भी वहां पर लगी हुई थी । सबसे पहले उन्होंने एक लोहे की कढ़ाई में लगभग एक कप भर पारे को डाला .... बाद में उन्होंने बताया कि वह 1 किलो पारा था । पारे को कढ़ाई में डाला और दो तीन प्रकार के केमिकल उस में मिलाकर गर्म किया । इसके पहले उन्होंने मुझे भी एक चश्मा

और मास्क पहनाया और स्वयं भी चश्मा मास्क पहन लिया ।

पहले उस कढ़ाई मे पारा पानी की बूंद की तरह इधर-उधर लहरा रहा था । उन केमिकल्स को डालने के बाद वह धीरे-धीरे स्थिर होने लगा । लगभग 15 मिनट के बाद वह खोवे जैसा हो गया । जिसे आसानी से कोई आकार दिया जा सकता था । इसके बाद रमा शंकर जी ने आग को बंद कर दिया और उस गरम पारे को कढाई से उठाकर एक सांचे में डाल दिया । वह सांचा लगभग शिवलिंग के जैसा दिखता था । करीब 5 मिनट बाद उन्होंने कोई दूसरा केमिकल उसके ऊपर डाला और उसको खोल दिया । उसके खुलते ही सामने पारे का शिवलिंग दिखाई दे रहा था । वह पूरी तरह से चिकना नहीं दिख रहा था ।

जहां जहां पर उबड़ खाबड़ था या गड्ढे दिख रहे थे उन स्थानों को रमाशंकर जी ने अपनी ग्रेनाइट की छोटी सी चम्मच से फिनिश कर दिया । अब पारे से बना हुआ वह शिवलिंग सुदर शिवलिंग के आकार का हो चुका था ।

अभी भी वह मुलायम था ..... तभी रमाशंकर जी उसको रिपेयर कर पाए थे ...

पूरी तरह सही हो जाने के बाद रमाशंकर जी ने उसे जिस पात्र में रखा था उस पात्र में कोई द्रव मिला दिया और 10 मिनट तक उस में पारे की शिवलिंग को डूबा कर रखा । शिवलिंग उस समय लगभग काले रंग का हो चुका था । उसके बाद उन्होंने शिवलिंग को बर्तन में से निकाल लिया और चलते हुए नल के नीचे 5 मिनट तक छोड़ दिया । पानी उस शिवलिंग के ऊपर गिरता रहा और गिरकर आगे बहता रहा .....

जैसे-जैसे पानी गिरता था , उसके ऊपर से छिलके जैसा पतला सा परत निकलता जाता था .... और 5 मिनट के बाद उसके ऊपर की पूरी काली परत निकल गई और वह चमकदार पारद शिवलिंग में परिवर्तित हो गया ।

यह मेरे लिए एक बिल्कुल नया अनुभव था..... क्योंकि मैंने इससे पहले कभी भी पारे का शिवलिंग बनते हुए नहीं देखा था । उस अद्भुत अनुभव के लिए मैं हमेशा रमा शंकर जी का आभारी रहूंगा । रमाशंकर जी के साथ

मेरे अच्छे संबंध थे । वह भी मजाकिया किस्म के प्राणी थे और उन्होंने मुझे इसे सिखाने का वादा भी किया । लेकिन डर के मारे मैंने उसे नहीं सीखा । क्योंकि मुझे लगा कि अगर आंख चली गई तो बाकी कार्यक्रम तो खत्म ही समझिए । बिना आंख के जीना आप भी जानते हैं कि कितना मुश्किल होगा .... उन्होंने मुझे तंत्र साधनाओं के विषय में भी जानकारियां दी । साथ ही यह भी बताया कि भोलाराम जी साधना के क्षेत्र में काफी आगे हैं ...

भोलाराम जी

पहली मुलाकात में भोलाराम जी का व्यक्तित्व मुझे थोड़ा अजीब सा लगा .....

वह अचानक से किसी भी बात पर फिश करके हंस पड़ते थे.....

उनकी हंसी भी बड़ी अजीब सी थी कुछ-कुछ पागलों जैसी .....

उनकी हरकतें भी बाकी लोगों से अलग हुआ करती थी । वह कभी भी ज्ञान बांटने की कोशिश नहीं करते थे । लेकिन जिन वरिष्ठ लोगों से मैं मिला करता था, वे उनको साधक मानते थे ... खैर धीरे धीरे उनसे आत्मीयता बढ़ी और फिर उन्होंने अपने बारे में थोड़ी-थोड़ी जानकारियां भी दी..... धीरे-धीरे उनके घर में आना-जाना बढ़ा । वह शहर से दूर एक गांव में रहते थे .....

जैसा कि आप लोग जानते ही हैं मैं छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में रहता हूं । यहां पर स्टील अथॉरिटी ऑफ

इंडिया लिमिटेड की तरफ से एक विशालकाय इस्पात संयंत्र भिलाई नगर में लगाया गया गया है । यह लगभग 15 किलोमीटर लंबा और 20 किलोमीटर चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ है । यहां खनिज से इस्पात बनाया जाता है । जिसे हम लोग स्टील कहते हैं । यह स्टील विभिन्न प्रकार के उपयोग में आता है । भिलाई अपने रेल पटरियों के लिए प्रसिद्ध है । भारतीय रेल को सप्लाई होने वाली रेल का सबसे बड़ा भाग भिलाई इस्पात संयंत्र के द्वारा ही सप्लाई किया जाता है। इस्पात बनाने के लिए लौह अयस्क की जरूरत पड़ती है । जिसके लिए खुदाई करनी पड़ती है । ऐसी जगह को खदान कहा जाता है । भिलाई इस्पात संयंत्र से कुछ दूरी पर दल्ली राजहरा नामक एक जगह है । जहां पर लौह अयस्क की खदान है । इसी खदान से भिलाई इस्पात संयंत्र को लौह अयस्क की सप्लाई होती है ।

दुर्ग से दल्ली राजहरा के लिए एक रेल लाइन जाती है । उसी रेल लाइन से भिलाई इस्पात संयंत्र को लौह अयस्क आता है । दिन भर में 2 बार इस मार्ग से यात्री गाड़ी गुजरती है । बाकी सारे समय माल गाड़ियों का

आना जाना लगा रहता है । इसी रेल लाइन के किनारे बसा हुआ था गांव झंगोरा । छोटा सा गांव था । उसी गांव में रहते थे भोलाराम जी ....

भोलाराम जी लगभग 38 साल के गृहस्थ थे । भिलाई की एक कंपनी में काम करते थे ..... उनके परिवार में पत्नी के अलावा 5 बच्चे भी थे । लगभग साल डेढ़ साल तक आना-जाना लगा रहा । वह कुछ कुछ साधनात्मक जानकारियां देते थे । लेकिन ..... जानकारियां देने के मामले में वे बड़े कंजूस थे .... इसके अलावा जब जटिल जानकारियां देते थे तो आखिर में हंस देते थे ..... तो दिमाग बड़ा कंफ्यूज हो जाता था कि यह जानकारियां दे रहे हैं या मजाक बना रहे हैं या क्या है ..... कुल मिलाकर संशय की स्थिति बन जाती थी....

संभवत: वे अपनी तरफ से मेरा परीक्षण कर रहे थे । लंबे समय तक साथ रहते रहते उनका भी मेरे ऊपर विश्वास बनने लगा ।

वे लगभग 5 फुट ऊंचे थे और दुबले पतले मगर गठीले बदन के स्वामी थे । उनके पास एक राजदूत की मोटरसाइकिल थी । उस मोटरसाइकिल पर उन्होंने लगभग छत्तीसगढ़ का हर कोना छान मारा होगा । तीन चार बार मैं उनके साथ उनकी मोटरसाइकिल पर विभिन्न स्थानों पर गया हूं ।

बारिश और चाय की दुकान

उस समय रेनकोट आदि का इतना प्रचलन नहीं था और मौसम भी सामान्यतः स्थिर हुआ करता था । आज तो बारिश के मौसम में गर्मी और गर्मी के मौसम में बारिश एक सामान्य घटना हो गई है ।

एक बार ऐसे ही हम मोटरसाइकिल से किसी जगह की यात्रा करके लौट रहे थे । उनकी मोटरसाइकिल भी चमत्कारिक मोटरसाइकिल थी । मैंने उनको उस में पेट्रोल डलवाते हुए कभी नहीं देखा । उस समय इस पर मैंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया था लेकिन जब आज मैं याद करता हूं तो मुझे ऐसा कोई अवसर याद नहीं आता जब मैंने उनको अपनी गाड़ी में पेट्रोल डलवाते हुए देखा हो ।

उस दिन अचानक आसमान में बादल छा गए और बादल भी काले-काले थे । ऐसा लग रहा था जैसे जबरदस्त बारिश होने वाली है । ठंडी ठंडी हवाएं चलने लगी थी । शाम का समय था और सुनसान सड़क थी ।

मैंने उनसे कहा - जोरदार बारिश होगी ऐसा लग रहा है ।

उनकी रहस्यमय हंसी गूंजी और बोले - वह देख लेगी ..... और मोटरसाइकिल फिर से हवा में बातें करने लगी .....

हम आगे बढ़ते जा रहे थे ..... मैंने पीछे पलट कर देखा तो लगभग 50 मीटर की दूरी पर बारिश हो रही थी .....

हम करीब 20 किलोमीटर तक वैसे ही आते रहे और बारिश हमसे उसी प्रकार 50 मीटर की दूरी पर होती रही ।

लगभग 20 किलोमीटर की दूरी तय कर लेने के बाद हम एक चाय की दुकान पर रुके । चायवाला बारिश की आशंका देखते हुए अपनी दुकान समेटने की तैयारी में था । उसने हमें चाय दी और वापस अपने काम में लग गया । हमने चाय की चुस्कियां लेनी चालू ही की थी और घनघोर बारिश होने लगी । आधा घंटे तक हम लोग उसी दुकान पर रुके रहे और मूसलाधार बारिश लगातार होती रही ।

आधे घंटे के बाद भोलाराम जी ने चाय वाले से एक सिगरेट ली और उसे लेकर थोड़ी आड़ में चले गए । मेरी

नजर बराबर उनके ऊपर टिकी हुई थी लेकिन मैंने उसका आभास उन्हें होने नहीं दिया और कनखियों से देखता रहा ।

मैंने उन्हें सिगरेट पीते हुए कभी नहीं देखा था । इसलिए उनका सिगरेट खरीदना मेरे लिए अजीब घटना थी । एक अंधेरे कोने में जाकर उन्होंने सिगरेट सुलगाई और उसे हवा में उछाल दिया । ऐसा लगा जैसे किसी ने उस सिगरेट को हवा में ही पकड़ लिया हो.....

अगर आपने सिगरेट को जलते हुए देखा हो और किसी को उसे पीते हुए देखा हो ... तो आप जानते होंगे कि जैसे ही कश अंदर लिया जाता है ... सिगरेट की सामने की तरफ लो बढ़ जाती है ..... वह आग की तरह चमकने लगती है और वह हिस्सा जल जाता है.... एक सिगरेट में कम से कम 10 कश लगते हैं और तब जाकर वह पूरी जलती है.....

लेकिन ..... ऐसा लगा जैसे हवा में लटकी हुई उस सिगरेट में से किसी ने एक जोरदार कश खींचा..... आप कल्पना कीजिए कि वह कितने जोर से खींचा

होगा की पूरी की पूरी सिगरेट एक ही बार में जल गई और ठूँठ अपने आप नीचे गिर गया....

धीरे से भोलाराम जी बोले - जाने की व्यवस्था कर .... बदले में एक हल्की सी हूंकार की आवाज आई ।

इसके बाद जो हुआ वह मेरी कल्पना से परे था ....

अचानक तेज हवा चलने लगी और 5 मिनट में मौसम साफ हो गया । आसमान खुल गया । तारे दिखने लगे.....

तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में उनके पास अनुभवों का एक विशाल भंडार था । इस संबंध में विभिन्न प्रकार की घटनाएं और कथाएं भी उन्होंने सुनाई । जिसमें महाविद्या साधना के संबंध में उनके पास ढेर सारी जानकारियां भी थी । पूजन विधियों की लगभग 100 से अधिक डायरिया उनके पास मौजूद थी । उसमें वह बैठकर अलग-अलग विद्याओं के पूजन तथा साधना के संबंध में मंत्रों की जानकारी लिखा करते थे ....

एक बार उन्होंने बताया - मुझे गुरुदेव की तरफ से एकांत में ध्वनि संकेत प्राप्त होते रहते हैं । जिसमें वह साधना की विधियां बताते हैं और उन विधियों को मैं डायरियों में नोट करता जाता हूँ ।

यह डायरिया ठीक वैसी ही थी, जैसी बही खातों के लिए दुकानदार इस्तेमाल करते हैं । कपड़े के जिल्द वाली मजबूत बाइंडिंग वाली कापियां । जिसे वे डायरी की तरह इस्तेमाल करते थे ।

उनका यह कहना था - बाइंडिंग की मजबूती और कागज की क्वालिटी की वजह से इस पर लिखे हुए शब्द काफी वर्षों तक बरकरार रहते हैं । इसलिए बनिए अपने वही खाते के रूप में इसका इस्तेमाल करते हैं । इन मंत्रों को भी कई सालों तक जीवित रहना है । इसलिए मैं भी उन्हीं का इस्तेमाल करता हूं....

भगवान भैरवनाथ

नवरात्रि से लगभग महीने भर पहले की बात थी । जब उन्होंने गुरुकुल में या अनुभवी साधक के सानिध्य में रहकर साधना करने के विषय में कुछ कुछ बातें बताई । तथा कहा - भैरव साधना तंत्र साधना की प्रारंभिक साधना है । इसे करने के बाद ही आगे की साधनाएं सिद्ध हो सकती हैं । भैरव साधना किए बिना तंत्र साधना के क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया जा सकता । तंत्र साधनाओं के प्रवेश द्वार के अधिपति स्वयं भैरव ही हैं ।

जिसे और स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया - जब भी किसी देवी या देवता का पूजन किया जाता है तो उसमें भैरव पूजन अनिवार्य होता है । ठीक उसी प्रकार तंत्र साधना में प्रवेश करने के लिए भी भैरव साधना करना अनिवार्य है ।

इसे सुनकर भैरव साधना करने की इच्छा जागृत हो गई । उस समय मेरे साथ मेरे मित्र सुदामा भी हुआ करते थे । सुदामा जी उस समय लगभग 30 वर्ष के थे । वे भिलाई में ही कार्य करते थे । वे विवाहित थे और

उनके दो बच्चे थे । तंत्र साधनाओं के विषय में जिज्ञासु भी थे ... इसलिए अक्सर हम दोनों ही साथ में बैठकर भोलाराम जी से विभिन्न विषयों पर चर्चा किया करते थे.....

भैरव साधना और हमारी चौकड़ी

हमारे वार्तालाप के दौरान उठने वाले विषयों में भैरव के संबंध में विशेष प्रकार की जानकारियां भी थी । यह सारे विवरण सुनते समय भोलाराम जी का बेटा रमेश भी आसपास में ही रहता था । सुनते सुनते उसे भी साधना करने की इच्छा हो गई और उसने धीरे से हम लोगों के सामने अपनी इच्छा व्यक्त की ।

दरअसल वह इन सब बातों पर कोई विशेष विश्वास नहीं रखता था । उसके पिता अवश्य बड़े साधक थे । लेकिन वह उनको बहुत ज्यादा मानता भी नहीं था और उनकी बातों पर ध्यान भी नहीं देता था । वह अपनी मनमर्जी का मालिक था । सबसे छोटा होने के बावजूद पूरे घर के लोग उससे कोई बात कहने से पहले 10 बार सोचते थे । उसके जवाब और प्रतिक्रिया का कोई हिसाब-किताब नहीं था । यानी कुल मिलाकर मस्त मौला किस्म का प्राणी था ।

जब उसे साधना करने की इच्छा हो गई तो वह अपने पिता से कह नहीं पा रहा था । क्योंकि.... जब भी उसके पिता ने उससे साधना करने के लिए कहा उसने

इंकार कर दिया था .... अब उसे शर्म लग रही थी कि वह अपने पिता से साधना के बारे में बात कैसे करेगा । हम लोगों ने अपनी तरफ से सिफारिश डाली ..... और भोलाराम जी ने ना नुकुर के बाद स्वीकार कर लिया ..... इस प्रकार से वह भी हमारे साधना प्रक्रम में शामिल हो गया ....

इसके अलावा चौथा व्यक्ति था वरुण .... वह एक दुकानदार था और साधना के क्षेत्र में उसकी भी रुचि थी .... इस प्रकार से हम चार लोग भैरव साधना करने के लिए तत्पर हो गए थे....

भोलाराम गांव के धनी व्यक्तियों में से एक थे ... गांव छोटा सा था .... मुश्किल से 200 घर रहे होंगे ...

भोलाराम जी का मकान नया नया बना था । उसके बगल में उनका पुराना मकान भी था । पूरी नवरात्रि हम लोग उन्हीं के घर पर रुकने वाले थे ... घर उनका काफी बड़ा था ।

पुराने मकान की छत काफी लंबी चौड़ी थी । इसलिए यह तय हुआ कि पुराने मकान की छत में वरुण सुदामा

मै और उनका बेटा एक साथ साधना करेंगे क्योंकि हम भैरव साधना कर रहे थे ।

भोलाराम जी अपने साधना कक्ष में साधना करेंगे जोकि दस बाई छह का एक कमरा था । उस कमरे में महाविद्या त्रिपुर सुंदरी का एक भव्य चित्र लगा हुआ था और उनके गुरु परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का चित्र लगा हुआ था ।

सामने में शीशम की लकड़ी से बनी हुई एक चौकी थी और चौकी के ऊपर शेर की खाल लाल कंबल के आसन के ऊपर बिछी रहती थी ।

वे उस कमरे में किसी को जाने नहीं देते थे । लगभग दो साल की अवधि से हमारा आना जाना लगा था लेकिन उस कमरे को सिर्फ बाहर से ही हम लोगों ने देखा था । अंदर प्रवेश करने की अनुमति वे नहीं देते थे और कमरे के बाहर हमेशा एक बड़ा ताला लटका रहता था .....

हम चारों एक कमरे में सोते थे और साधना कक्ष के बगल में बने हुए कक्ष में वे । रात को लगभग साढ़े नौ

बजे से साधना प्रारंभ होती थी और सभी लोग 51 माला मंत्र जाप करते थे या फिर समय के हिसाब से 3 घंटे तक मंत्र जाप करते थे ।

साधना में उन्होंने जो विशेष बात बताई थी वह यह थी कि अर्ध रात्री यानी कि रात को 12:00 बजे का समय मंत्र जाप में गुजरना ही वास्तविक रात्रि साधना है .....

यह एक ऐसा साधनात्मक ज्ञान था या रहस्य जो सभी साधनाओं पर लागू होता है .... अगर आप उस संधिकाल से यानी अर्धरात्रि में साधना करते हुए उसे पार करते हैं तो अनुभव होने की संभावना बढ़ जाती है ...

प्रतिपदा का दीप स्थापन

नवरात्रि के पहले दिन जब हम लोग दीपक प्रज्वलित करने वाले थे तभी पूरा कमरा अजीब सी खुशबू से भर गया । अब तक आप लोग भी समझ गए होंगे कि इस प्रकार की खुशबू तब आती है जब किसी दैवीय शक्ति का आगमन होता है ।

इसका दूसरा पक्ष भी है कि अगर आपके किसी शुभ कार्य के दौरान ऐसी बदबू आती है जैसी गटर से आती है या शौच से आती है तो आप मान कर चलें कि कुछ नकारात्मक शक्तियां वहां पर मौजूद है ....

खैर ...

जब हम लोग दीप स्थापना कर रहे थे तो वहां पर बहुत मादक खुशबू फैली हुई थी । जिसे सूंघकर हम लोग आश्चर्यचकित थे ...

भोलाराम जी प्रसन्न थे । संभवत: उनकी दृष्टि हम लोगों से ज्यादा उच्च स्तर की थी और वे उस शक्ति का अनुभव या उसका दर्शन जो भी था , कर पा रहे थे और

उनके चेहरे पर बेहद तृप्ति और संतोष के भाव दिखाई दे रहे थे ।

दीप स्थापना के साथ उन्होंने पीठ स्थापना भी करवाई ... इसके अंतर्गत विभिन्न देवी-देवताओं को श्री यंत्र या श्री चक्र में स्थापित करके उनका पूजन संपन्न किया जाता है । इस पूरे पूजन में लगभग 3:30 घंटे का समय लगा । पूजन शाम को लगभग 8:00 बजे पूर्ण हो गया । कलश तथा दीप स्थापना नीचे के कक्ष में की गई थी ...

पहली रात

पहली रात्रि में मंत्र जाप चालू हुआ ...
आसमान में काले काले बादल दिखाई देने लगे थे और मौसम ऐसा लग रहा था जैसे बारिश हो सकती है ।
लेकिन बारिश नहीं हुई ....

हम चारों छत पर थे । छत काफी बड़ा लगभग 20 फुट चौड़ा और 30 फुट लंबा था । हम लोग उसके बीच वाले भाग में बैठे हुए थे । छत ढलाई किया हुआ कंक्रीट का छत था । लेकिन उसके चारों तरफ पेरापेट वाल नहीं थी ।

मैं और सुदामा सामने बैठे थे । सुदामा जी के पीछे रमेश बैठा था । मेरे पीछे वरुण बैठा था।

धीरे-धीरे मंत्र जाप बढ़ता गया.....

अगर आप उग्र साधनाएं कर रहे हो तो आपको मंत्र का उच्चारण जोर से करना होता है भोलाराम जी ने जो भैरव मंत्र हम लोगों को दिया था वह था
॥ ॐ भ्रं भैरवाय फट ॥

के एक कोने से दूसरे कोने तक जाती और उसके बाद नीचे उतर जाती ... कुछ समय बाद दूसरे कोने से फिर ऊपर आती और वैसे ही छत पार कर के नीचे उतर जाती । लगभग आधे घंटे तक उस चमकती हुई चीज का यह कार्यक्रम चलता रहा और उसके बाद वह गायब हो गई....

सुबह मैंने बाकी तीनों से पूछा ... लेकिन इनको वह चमकती हुई चीज नहीं दिखाई दी थी । मुझे थोड़ी खुशी हुई और थोड़ा सा अहंकार भी ! कि मैं और मेरी साधना ज्यादा प्रभावशाली है ! इसलिए मुझे ऐसी चीजें दिखाई दे रही है....

लेकिन वह मेरा भ्रम था ! जो जल्द ही टूटने वाला था....

दूसरी रात्रि फिर से हम लोग मंत्र जाप करने के लिए बैठे .... मंत्र जाप करते समय मंत्र की ध्वनि धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी ....

अचानक सुदामा जी के मंत्र जाप की ध्वनि काफी जोर से हो गई .... मुझे भी भय का आभास हुआ ..... मैंने उसकी तरफ देखा ! उसके चेहरे पर क्रोध के भाव स्पष्ट

के एक कोने से दूसरे कोने तक जाती और उसके बाद नीचे उतर जाती ... कुछ समय बाद दूसरे कोने से फिर ऊपर आती और वैसे ही छत पार कर के नीचे उतर जाती । लगभग आधे घंटे तक उस चमकती हुई चीज का यह कार्यक्रम चलता रहा और उसके बाद वह गायब हो गई....

सुबह मैंने बाकी तीनों से पूछा ... लेकिन इनको वह चमकती हुई चीज नहीं दिखाई दी थी । मुझे थोड़ी खुशी हुई और थोड़ा सा अहंकार भी ! कि मैं और मेरी साधना ज्यादा प्रभावशाली है ! इसलिए मुझे ऐसी चीजें दिखाई दे रही है....

लेकिन वह मेरा भ्रम था ! जो जल्द ही टूटने वाला था....

दूसरी रात्रि फिर से हम लोग मंत्र जाप करने के लिए बैठे .... मंत्र जाप करते समय मंत्र की ध्वनि धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी ....

अचानक सुदामा जी के मंत्र जाप की ध्वनि काफी जोर से हो गई .... मुझे भी भय का आभास हुआ ..... मैंने उसकी तरफ देखा ! उसके चेहरे पर क्रोध के भाव स्पष्ट

दिखाई दे रहे थे । वह सामने की ओर देखता हुआ मंत्र जाप में लीन था ....

उसकी आवाज सुनकर ऐसा लग रहा था जैसे किसी को डांट रहा हो .... उसे सुनकर हृदय में भय का संचार होता था ....

पहली बार मैं ऐसी स्थिति में बैठकर साधना कर रहा था । घर में अकेले बैठकर साधना करना एक अलग प्रकार का अनुभव होता है । सामूहिक रूप से इस प्रकार बैठकर साधना करने में अलग-अलग साधकों के चेहरे में आने वाले भाव ! उनकी गतिविधियां ! उनका मंत्रोच्चार ! यह सब आपको भी प्रभावित करता है ....

वरुण आंखें बंद करके मंत्र जाप करता हुआ अपने अलग ही ध्यान में लगा था । तो उसे शायद खबर ही नहीं थी .... वह अपनी मस्ती में बैठा हुआ था .....

लेकिन सबसे ज्यादा डर रहा था रमेश .....

रमेश यूं तो बहुत बहादुर था ...
लेकिन .....

अंधेरी रात में एकांत छत में आप बैठे हो और मध्यम आवाज में मंत्र जाप कर रहे हो .....

तभी अचानक चार में से एक आदमी दहाड़ने जैसी आवाज में मंत्र जाप करने लग जाए तो अच्छे अच्छों की हवा सरक जाती है । कुछ-कुछ ऐसा ही रमेश के साथ भी हो रहा था ....

उसकी पूरी बहादुरी ढीली पड़ चुकी थी ! वह बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभाल कर बैठा हुआ था ...

रमेश थोड़ा घबराया हुआ था ..... थोड़ा चिंतित था ..... और बड़ी मुश्किल से अपने को संभाल कर मंत्र जाप में लगा हुआ था....

इस प्रकार हम चार नौसिखियों की साधना चल रही थी...

अर्धरात्रि के आसपास .... वह अचानक उठा ..... और दौड़कर नीचे चला गया.....

हम लोग भी घबरा गए कि क्या हुआ ?

लेकिन....

साधना में बीच मे उठना मना था ! तो ! हम लोग अपने आसन पर बैठे हुए थे ....

वह भयानक आकृति

लगभग एक बजे मंत्र जाप पूर्ण हुआ । हम लोग उतर कर नीचे गए । नीचे जाने पर हम लोगों ने देखा कि रमेश कंबल ओढ़ कर लेटा हुआ है और जूड़ी के मरीज की तरह कंपकंपा रहा है । लाइट डालने के बाद 5-10 मिनट तक तो उसने आँखें ही नहीं खोली और उसी प्रकार से थरथर कांपता रहा .....
हम लोग भी घबरा गए के बच्चे को हम लोगों ने सिफारिश करके साधना में बैठाया था । इसके साथ कुछ गड़बड़ हो गया तो क्या करेंगे ?

मैं और सुदामा उसके बगल वाली खाट पर बैठ गए । वरुण पानी लेकर आया और उसे उठाकर पानी पिलाया ..... तब भी उसका कांपना जारी था .... पानी पीने के बाद हम लोगों को जब उसने देखा तब जाकर कुछ 10:15 मिनट के बाद वह थोड़ा शांत हुआ ....

हमारे बार बार पूछने पर भी वह कुछ बोल नहीं पा रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे उसके मुंह से आवाज ही नहीं निकल पा रही हो । जब वह थोड़ा संभला तब

उसने बताना चालू किया उसने कहा - सुदामा भैया जब ज़ोर ज़ोर से मंत्र जाप कर रहे थे तो मुझे डर लगने लगा । धीरे-धीरे उनकी आवाज बढ़ती जा रही थी । जैसे-जैसे उनकी आवाज बढ़ती थी मेरा डर भी बढ़ता जाता था .... जब मैं छत से भागकर नीचे की तरफ आया ... उससे लगभग 5 मिनट पहले सुदामा जी के सामने एक विशालकाय आकृति जो काले रंग की थी स्पष्ट होने लगी थी ..... उसकी ऊंचाई कम से कम 20 फीट रही होगी और सिर दो ढाई फीट का रहा होगा । बेहद लंबा चौड़ा हट्टा कट्टा शरीर था । उसकी आंखें बेहद भयानक थी । उन आंखों से आग की लपटें निकल रही थी । उसके बाल खड़े खड़े थे और गले में हड्डियों की माला लटकी हुई थी । वह पूरी तरह से नंग धड़ंग था । हाथ पैर में मोटे मोटे कड़े थे और एक हाथ में त्रिशूल था । जिसका फाल उस अंधेरी रात में भी चमचमा रहा था । उसके साथ एक कुत्ता था । जो सामान्य से बड़ी आकृति का था .... उसकी ऊंचाई कम से कम 4 फीट रही होगी । वह लगभग 6 फीट लंबा था । उसकी आंखें भी उस आकृति की आंखों के जैसी ही चमकदार थी ...

उसका मुंह खुला हुआ था ....

जीभ बाहर की तरफ लटकी हुई थी और वह लपलपा रही थी .....

वह आकर मेरे दाहिने तरफ खड़ा हो गया । उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और मेरे गाल को चाट लिया । उसकी सांस मैं अपने चेहरे पर महसूस कर सकता था ....

उसका सिर इतना बड़ा था कि मुझे अपना सिर उससे छोटा दिखाई दे रहा था ।

बिलकुल ऐसा लग रहा था ! जैसे ! कोई शेर अपने शिकार को सूंघकर चाट कर देख रहा हो । उसे देख कर मैं अपने आसन से चिपक गया । मुझे ऐसा लगा ! जैसे वह हम सब को खा जाएगा । कुछ देर मेरे पास खड़े रहने के बाद वह हम चारों का चक्कर लगाकर फिर से उस विशालकाय व्यक्ति के बाएं तरफ जाकर खड़ा हो गया ।

वह विशालकाय व्यक्ति अपने त्रिशूल के साथ सुदामा भैया के सामने खड़ा हुआ था । थोड़ी देर के बाद वह

पलट कर छत के दूसरी छोर की तरफ जाने लगा ...
उसके साथ उसका कुत्ता भी था ....

जैसे ही वह पलटा .....

मैं प्राण बचाकर नीचे की ओर भागा... और यहां कमरे में आकर लेट गया.....

उसके अनुभव सुनकर हम लोग भी डर गए ।
हमने सुदामा की ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ।
लेकिन ! उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया था.... यानी कि वह आकृति वहां मौजूद जरूर थी ... लेकिन सिर्फ रमेश को ही दिखाई दे रही थी.....
हम तीनों की आंखें खुली हुई थी और हम में से किसी को भी न तो वह व्यक्ति दिखाई दिया था और ना ही वह कुत्ता....
यह आश्चर्यजनक बात थी.....

तब तक भोलाराम जी की भी साधना पूर्ण हो चुकी थी । हलचल सुनकर वह भी हमारे कमरे की तरफ आए । पूरा किस्सा सुनने के बाद उन्होंने ढांढस बांधते हुए कहा - भैरव साधना बच्चों की साधना नहीं है । यह

पुरुषों की साधना है । यह पुरुषत्व की साधना है । इसे करना कठिन है । भैरव के स्वरुप के दर्शन करना उससे भी कठिन है, लेकिन अगर तुम डटे रहोगे तो तुम्हारे अंदर साहस शक्ति दृढ़ता और विश्वास बढ़ेगा । भैरव की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति इस युग में सफलता को प्राप्त करता ही है । उसके कार्यों में कोई भी रुकावट कभी भी आड़े नहीं आती । वह सारी रुकावटें सारी समस्याओं में मार्ग दिखाने का काम करते हैं क्योंकि वास्तव में भैरव ही क्रियात्मक शक्ति है । इस सृष्टि में जो भी गतिशील है । वह सब कुछ भैरव शक्ति के द्वारा ही किया जाता है । तुम लोग चाहो तो साधना बीच में छोड़ सकते हो । यह जो अनुभव तुम्हें हुआ है ..... वह अभूतपूर्व है ..... ऐसे अनुभव का मतलब यह है कि भगवान भैरव की कृपा तुम लोगों के ऊपर है । ऐसी स्थिति में मेरी राय यह है कि किसी भी प्रकार से तुम नवरात्रि तक मंत्र जाप अवश्य करो .....

इतना कह कर वह कक्ष से बाहर चले गए.....

हम लोग आधे घंटे तक चर्चा करते रहे । उसके बाद सो गए । यह स्थिति बड़ी अजीब थी । हम में से किसी को भी वह स्वरूप दिखाई नहीं दिया था ।

लेकिन.....

रमेश ने जिस प्रकार का वर्णन किया था उसे सुनकर हम लोगों की आत्मा तक थरथरा गई थी ...

किसी किताब में या कहानी में ऐसे उग्र स्वरूप का वर्णन सुनना एक अलग बात होती है ... किसी प्रत्यक्षदर्शी और वह भी ऐसा जो हमारे ही बीच का हो उसके मुंह से इस प्रकार की स्थिति का वर्णन सुनने के बाद हमारे होश फाख्ता हो चुके थे और साधना करना है या नहीं करना है इस ऊहापोह में हम चारों के चारों थे .....

अगली सुबह की चर्चा

सुबह भोलाराम जी की पत्नी ने सबको नाश्ता कराया । वे बेहद सरल और सहृदय महिला थी । हम लोग उन का मातृवत सम्मान करते थे । वह भी हमें अपने बच्चों की तरह ही मानती थी ।

गांव में खाने का स्टाइल भी अलग किस्म का होता है । एक लकड़ी का पीढ़ा या चौका आपके सामने रखा जाता है और साथ में एक लोटा और गिलास पानी भरा हुआ रहता है । कांसे या पीतल की थाली में भोजन परोसा जाता है । अब तो थोड़ा परिवर्तन हो गया है और स्टील की थालियां और फाइबर की थालियां भी आ गई है लेकिन उस समय ठेठ छत्तीसगढ़िया भोजन की शैली वैसे ही थी .....

चौकी पर आपको पीतल की थाली में भोजन उपलब्ध कराया जाता था । मैं शुरू से ही टेबल कुर्सी में बैठ कर खाना खाता था । मेरी आदत भी वैसी ही थी । बाकी सारे लोग उसी स्टाइल में खाना खाने के आदी थे ।

मेरे लिए वह एक नई चीज थी । मुझे ऐसा लगता है कि, आप जिस परिवेश में जाएं, जिस स्थान पर जाएं, वहां के रीति-रिवाजों को और नियमों को सहजता से स्वीकार करना चाहिए । इससे आप उस माहौल में आसानी से ढल जाते हैं । इससे वहां रहने वाले लोग भी आपको अपने बीच के आदमी के रूप में स्वीकार कर लेते हैं ।

अगर आप अपने शहरी होने का या आधुनिक होने का या स्टाइलिश होने का ढोंग रचाते रहेंगे तो आप यह मान कर चलिए कि आप कभी भी लोगों के साथ जुड़ नहीं सकते । मेरी आदत वैसी ही थी । गांव में गांव के जैसा ....
भोजन पालथी मारकर करना है.... तो करना है ...

भोजन उन्होंने परोसा और हम लोगों ने दबा कर खाया । गैस में बने हुए भोजन और लकड़ी से पके हुए भोजन के स्वाद में जमीन आसमान का फर्क होता है । यह अवश्य है कि गैस में भोजन जल्दी बन जाता है । लेकिन ..... अगर एक ही सब्जी आप गैस में बना लें और उसी सब्जी को उसी प्रकार से लकड़ी पर बनाएं तो दोनों के

स्वाद में आपको जमीन आसमान का फर्क साफ साफ दिखाई देगा...

तो स्वादिष्ट भोजन होने की वजह से हम लोग दो रोटी के जगह चार रोटी खा जाते थे और माताजी भी हमको बड़े स्नेह से खिलाती थी.....

भोजन के बाद हम चारों लोगों की चौकड़ी फिर से चर्चा के लिए बैठी ।
सबसे प्रमुख विषय था ! रमेश ।
रमेश सबसे छोटा था इसलिए उसका ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी था । हम लोगों ने सबसे पहले अलग-अलग प्रकार की कहानियां किस्से सुनाकर उसका ध्यान बंटाया और आखिर में चर्चा प्रारंभ की कि साधना को आगे बढ़ाया जाए या यहीं पर छोड़ दिया जाए ?

भैरव बाबा के विराट स्वरूप के दर्शन केवल रमेश को हुए थे .... इसलिए वही सबसे ज्यादा डर भी रहा था । डर मुझे भी लग रहा था । लेकिन मैं इस अवसर को खोना नहीं चाहता था ।

हम लोग नवरात्रि वहीं पर निवास करने का तय करके घर से अपना बोरिया बिस्तर लेकर आ चुके थे । उन 9 दिनों में अच्छे साधनात्मक अनुभव लेकर जाने का विचार मेरे मन में एकदम स्पष्ट था ।

यह घटना इस पूरे प्लान को चौपट कर देने के लिए काफी थी । अब सबसे पहला काम था रमेश को तैयार करना । काफी समझाने बुझाने के बाद रमेश तैयार हो गया । लेकिन उसने शर्त रखी की वह नीचे कमरे में बैठकर साधना करेगा ।

इस संबंध में भोलाराम जी से चर्चा हुई । उन्होंने कहा - इसमें कोई आपत्ति नहीं है तुम चाहो तो नीचे बैठ कर भी साधना कर सकते हो....

तो ...

यह तय हुआ कि रमेश और वरुण नीचे जहां हम लोग सोते थे उस कमरे में बैठकर साधना करेगे ... हम दोनों ऊपर छत पर बैठकर साधना करेंगे ।

तीसरी रात

तीसरे दिन रात्रि काल लगभग 9:30 बजे के आसपास फिर से मंत्र जाप करने के लिए बैठे ....

मंत्र जाप चालू हुआ और धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगा आधी रात तक कोई घटना घटित नहीं हुई और वह रात बिना किसी दिक्कत के गुजर गई ।

लगभग एक बजे हम लोग नीचे कमरे में पहुंचे । वहां पहुंचे तो हम घबरा गए..... क्योंकि .... वहाँ पर वरुण और रमेश दोनों अपने अपने आसन पर लुढ़ककर पड़े थे । हम दोनों बुरी तरह घबरा गए । गौर से देखा तो दोनों की साँस चल रही थी ..... यह देख हम दोनों को तसल्ली हुई ।

उन दोनों के ऊपर हम लोगों ने पानी छिड़का । थोड़ी देर में उनको होश आया । पांच मिनट के बाद वे संयत हुए । उसके बाद जो उन्होंने बताया वह भी बड़ा लोमहर्षक था.....

वरुण बोला - हम लोग मंत्र जाप करने के लिए बैठ गए थे । लगभग 11 बजे तक सब कुछ ठीक-ठाक

चलता रहा । मंत्र जाप चल रहा था । शुरु शुरु में थोड़ी घबराहट थी.... फिर धीरे-धीरे सब सामान्य होता चला गया ।

रात 11 बजे सामने का दरवाजा भड़ाक से खुल गया .....

हम दोनों आंख बंद करके मंत्र जाप कर रहे थे ....
जैसे ही आवाज आई हम लोगों ने आंख खोल कर देखा ....

लेकिन .....

वहां पर कोई नहीं था ।

बंद दरवाजा पूरा खुला हुआ था । उसके पल्ले हिल रहे थे जो इस बात का संकेत थे कि उन्हें बड़ी तेजी से खोला गया था । थोड़ी देर में हम लोग थोड़े से संयत हुए और फिर मंत्र जाप चालू किया । कुछ समय और शांति रही .....

रात 11:30 बजे के आसपास दरवाजा अपने आप बंद हो गया । यह सब देख कर हम लोग डर के मारे कांपने लगे । पांच दस मिनट के बाद फिर सब शांत हो गया .....

हिम्मत करके हम लोग फिर मंत्र जाप करने लगे । मंत्र जाप करते करते आधा पौन घंटा बीत गया । लगभग 50 माला पूरी हो चुकी थी....

आखरी माला का जाप हम लोग कर रहे थे ....

जैसे ही आखरी माला पूरी हुई ... दरवाजा फिर भडाक से खुल गया .....

अद्भुत दृश्य था ....

वहां पर लगभग 3 फुट ऊंचा, गोरा चिट्टा एक बालक खड़ा हुआ था .....

उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था....

वह मुस्कुराता हुआ खड़ा था .....

उसे देख कर मन को बहुत शांति मिल रही थी । वह धीरे-धीरे हमारी तरफ बढा और प्रसाद के रूप में जो गुड़ का ढेला हम लोगों ने सामने रखा हुआ था .... उसे उठाकर खाता हुआ वह वापस चला गया ....दरवाजा फिर बंद हो गया ...

हम लोग की सांस में सांस आई.....

जाप पूरा होने के बाद हम लोग आसन समेटने की तैयारी करने लगे । तभी .....

वह दरवाजा फिर भड़ाक की आवाज के साथ खुला .....

वही कुत्ता .... जो छत पर दिखा था ... वही ... तेजी से अंदर की ओर आया और गुर्राता हुआ सीधा हमारी ओर लपका .....अब यह हमारी सहनशक्ति के पार हो चुका था ....

उसके अंदर छलांग लगाते ही हम दोनों ड़र के मारे बेहोश हो गए ....

उसके बाद क्या हुआ ? यह हम लोग को नहीं पता ।

मैंने और सुदामा ने देखा कि उन दोनों के सामने रखे हुए गुड़ के ढेले गायब थे । भैरव यंत्र और माला इधर-उधर बिखरे हुए थे । बाकी सब सामान्य लग रहा था ।

इस घटना के बाद हम चारों डर गए .....

लेकिन सबसे ज्यादा रमेश डरा हुआ था ....

उसके साथ दो-दो बार इस प्रकार की घटना हो चुकी थी.....

वरुण भी भयभीत लग रहा था ...

रमेश डरकर साधना छोड़ने की स्थिति में आ चुका था । वरुण भी कमोबेश उसी मानसिकता में था ।

उस रात भोलाराम जी इतना सब होने के बाद भी हमारे कमरे की तरफ नहीं आए । वह रात भर अपने साधना कक्ष में ही रहे ।

चाय पर चर्चा

अगले दिन सुबह चाय पीते पीते वरुण ने पूरा घटनाक्रम बताया । घटना सुनने के बाद भोलाराम जी फिर अपने उसी रहस्यमय तरीके से फिस्स कर के हंस दिए ।

उन्होंने क्रोध मे कहा - तुम्ही लोगों को भैरव साधना करने का शौक था । बच्चों का खेल समझ लिया था क्या तुम लोगों ने ?

हम चारों ने अपना सिर झुका लिया , क्योंकि वाकई हमारी बार बार की मांग पर ही उन्होने भैरव साधना करवाने का कहा था ...

हमारी उदासी को देखकर वह फिर हंस पड़े और बोले - वह उग्र देवता है । लेकिन अपने साधक को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं । बेवजह डरने की कोई जरूरत नहीं है । हां उनका स्वरूप उग्र है । तो उनकी साधना में अनुभव भी ऐसे ही होंगे । इस बात के लिए निश्चिंत रहो कि किसी साधक को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचेगा ।

इतना कहकर वो चले गए । नाश्ता करने के बाद हमारी चौकड़ी फिर से चर्चा करने के लिए बैठी । रमेश और वरुण की हालत बेहद खस्ता थी । दोनों किसी भी तरह इस मायाजाल से निकलना चाहते थे । ऐसा लग रहा था जैसे दो आजाद पंछी किसी पचड़े में फंस गए हो

.....

हम दोनों भी डरे हुए थे .....

हमारे साथ यह घटना नहीं हुई थी । इसलिए हम थोड़ी सी हिम्मत ज्यादा दिखा रहे थे । यह और बात है कि अंदर ही अंदर हमारी भी आत्मा तक कांप रही थी .....

उस दिन चर्चा के दौरान साधना छोड़ने के विषय पर गंभीर चिंतन किया गया और अंततः फैसला यह निकला कि साधना को कंटिन्यू किया जाए । यह भी तय हुआ कि भोलाराम जी से प्रार्थना किया जाए कि कुछ ऐसा करें कि इस तरह के डरावने अनुभव ना हो .....

उस दिन हम दिनभर इंतजार करते रहे लेकिन भोलाराम जी सुबह से लापता थे । उनके बारे में किसी को पता नहीं था कि वह कहां गए । इस वजह से उनसे चर्चा

करने की संभावनाएं समाप्त हो गई क्योंकि वह रात 9 बजे तक भी घर नहीं लौटे थे ।

चौथी रात

अब हम लोगों को ही तय करना था कि क्या करें ?
काफी ना नुकुर के बाद आखिर में यह तय हुआ कि चारों एक साथ बैठकर साधना करें ।
अब .... क्योंकि कमरे के अंदर भी भयभीत करने वाली परिस्थितियां बन ही रही थी तो तय हुआ कि चारों वापस छत में बैठकर साधना करेंगे ।
उस रात हम चारों छत पर बैठे ....

अभी आसन पर बैठे हुए मुश्किल से आधे घंटे बीते होंगे कि बारिश होने लगी.....

बारिश मामूली बारिश नहीं थी .....

मोटी मोटी बूंदें आसमान से टपक रही थी...

ऐसा लग रहा था जैसे छोटे छोटे पत्थर हम लोगों के ऊपर बरस रहे हो .....

नया-नया साधना का जोश था और आसन से नहीं उठने की जिद्द भी । कुल मिलाकर 10-15 मिनट तक चारों

अपने अपने आसन पर डटे रहे । सारे कपड़े भीग चुके थे । धीरे-धीरे जिस कंबल पर बैठे थे वह कंबल भी भीग रहा था । नीचे से गीले पन का एहसास बराबर हो रहा था ....

सबसे पहले वरुण उठकर नीचे चला गया .....
उसकी देखा देखी रमेश भी नीचे चला गया .....

संभवत: वे नीचे के कमरे में जाकर मंत्र जाप करने का सोचे होंगे । मैं और सुदामा डटे हुए थे । कुछ देर में बिजली भी कड़कने लगी । कुल मिलाकर काफी डरावना सा माहौल था.....

मंत्र जाप करते करते लगभग एक बज गए । बारिश की वजह से हम लोग पूरे भीग चुके थे । ठंड के मारे हाथ पांव अकड़ने लगे थे । हम लोगों को लगने लगा कि नीचे उत्तर जाना चाहिए था ....
लेकिन....
अब तो सब घटित हो चुका था । मंत्र जाप पूरा होने के बाद अपने आसन से उठने में हम लोगों को 10 मिनट लग गए । 10 मिनट बाद हम नीचे उतरे और अच्छी तरह

से हाथ पैर सिर पोछ कर बिस्तर के अंदर घुस गए । ठंड के मारे कम्पकम्पाहट हो रही थी ।

दोनों विद्वान वरुण और रमेश आराम से खर्राटे भर रहे थे ।

इधर ठंड हमारी आत्मा को भी हिला रही थी । थोड़ी देर के बाद कंबल की गर्मी से थोड़ी सी राहत महसूस हुई । फिर हम दोनों भी नींद के आगोश में चले गए ।

अगले दिन जब उठे तो हम दोनों को तेज बुखार था । भोलाराम जी ने दवा लेने से मना कर दिया था । उन्होंने कहा कि साधना से आने वाला बुखार अपने आप कम भी हो जाएगा । हम दोनों ने दवा नहीं ली । शाम होते-होते फिर से मौसम खराब होने लगा.....

अरुण और रमेश ने घोषणा कर दी कि वह नीचे के कमरे में ही मंत्र जाप करेंगे .....

मैं उहापोह में था कि क्या करूं ?
सुदामा जी छत पर साधना करने के मूड में थे । खुली हवा में आसमान के नीचे बैठकर साधना करने का

मजा ही कुछ अलग होता है , लेकिन डर पाव को पीछे रखने के लिए मजबूर कर रहा था । सुदामा ने काफी प्रोत्साहित किया और मैं भी छत पर बैठने के लिए राजी हो गया । यह भी हो सकता है कि उनको अकेले बैठने में डर लग रहा हो ..... जो भी हो..... अंततः यह तय हो गया कि वरुण और रमेश नीचे के कमरे में साधना करेंगे और मैं तथा सुदामा छत के ऊपर साधना करेंगे ।

पाँचवीं रात और कड़कती बिजली

रात 9:30 बजे फिर से हम लोग छत में पहुंच गए । जैसे ही आसन लगाया एक जोरदार बिजली कड़की और छत के बगल में लगे हुए गूलर के पेड़ पर गिरी..... उसके साथ ही उसकी एक बड़ी शाखा भी टूटकर नीचे गिर पड़ी .....

इतनी जबरदस्त आवाज थी जैसे लगा कि आसमान ही फट पड़ा हो .....

उसके साथ साथ जब पेड़ की शाखा भी टूटी तो प्राण मुंह की ओर आने लगे ....

आसन लग चुका था और बैठने का मूड बना चुके थे । हम दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और आंखों ही आंखों में पूछा कि क्या करें ।

भोलाराम जी के द्वारा कहे गए शब्द कानों में गूंज रहे थे ....

भैरव साधना पुरुषों की साधना है । यह पुरुषत्व की साधना है । यह साधना डरपोक लोगों के लिए नहीं है ।

वह बात याद आते ही फिर से अंदर का डरा हुआ बहादुर जाग गया । हम दोनों ने छत पर ही बैठकर साधना करने की ठानी । वह रात इसी प्रकार से गुजरी । बिजली कड़कती रही लेकिन बारिश नहीं हुई । हम लोग पहले की रात की ही तरह बारिश की आशंका में बैठे रहे ....

इंतजार करते रहे कि अब बारिश होगी तब बारिश होगी....
लेकिन ...
बारिश नहीं हुई ।

इसी प्रकार मंत्र जाप करते करते रात के एक बज गए और हमारा मंत्र जाप पूरा हो गया । कोई विशेष घटना नहीं हुई इसलिए हम दोनों वापस उत्साहित होकर आसन समेटने लगे ।

आसन समेटने के बाद हम खड़े हुए और छत के किनारे पर बनी हुई सीढ़ियों की तरफ नीचे उतरने के लिए आगे बढ़े । सीढ़ियां जिस और बनी थी उसके आगे खुला आंगन था । जहां पर पैरे का ढेर था । गाय बंधी हुई थी और एक पुराना कुआं था । कुए के बगल में

पीपल का एक पेड़ भी था । जो छत से मुश्किल से 4 या 5 फीट की दूरी पर रहा होगा .....

हम लोग छत के किनारे तक पहुंचने ही वाले थे तभी जबरदस्त बिजली कड़की और उस पीपल के पेड़ पर जा गिरी .... ऐसा लगा जैसे उस पेड़ में आग लग गई हो....

बिजली हमसे मुश्किल से 5 फुट दूर गिरी होगी । उसकी रोशनी ! उसकी आवाज..... और जलता हुआ पेड़ ....

इतना हम लोगों को बेहोश करने के लिए भी काफी था ...

इसके बाद क्या हुआ ? यह ना मुझे पता चला ना सुदामा जी को.....

सुबह पौ फटने लगी और छत में हल्की हल्की रोशनी आने लगी । तभी हमारी आंखें खुली । स्वाभाविक रूप से हमारी नजर कुएं के बगल वाले पीपल के पेड़ की ओर गई ....

अद्भुत आश्चर्य ! वह पेड़ तो पहले की तरह बिल्कुल हरा भरा खड़ा था । अब चौकने की बारी हमारी थी ।

तो !

जो रात को हमने देखा वह क्या था ?

भोलाराम जी का गुप्त साधना कक्ष

कुल मिलाकर भैरव बाबा अपने साधकों को ठोक बजा कर देख रहे थे । जलते हुए पेड़ को देखने में मुझे गलती तो नहीं हुई थी । यह सोचकर मैंने सुदामा जी से भी पूछा । उन्होंने भी कहा कि जलता हुआ पेड़ उनको भी दिखाई दिया था ।

इस घटना ने हमारे अंदर इतना आत्मविश्वास भर दिया कि भले ही कितनी भयानक घटना हो जाए लेकिन वास्तव में हम सुरक्षित रहेंगे । जैसे ही यह आत्मविश्वास हमारे अंदर आया । हमने तय कर लिया कि अब इसे पूरी किए बिना छोड़ेंगे नहीं...
खैर....

ऐसा ठान कर हम लोग छत से नीचे उतरे । जैसे ही हम लोग छत से नीचे उतरे तो देखा भोलाराम जी अपने गमछे और अंडरवियर के साथ तैयार खड़े थे । उन्होंने हमें अपने गमछे और अंडरवियर लेकर साथ चलने कहा । वरुण और रमेश अभी भी सो रहे थे ।

भोलाराम जी हमें अपने साथ लेकर अपने खेत की तरफ गए । उनका खेत नाले के किनारे था । नाले के बाद दूसरे गांव की सीमा प्रारंभ हो जाती थी...

खेत के किनारे किनारे चलते हुए हम लोग एक झोपड़ी तक पहुंचे । वह झोपड़ी झाड़ियों के बीच में बनी हुई थी और आसानी से किसी को दिखाई नहीं दे इस तरह से बनी हुई थी । उसके एक तरफ पंप हाउस था । जिसमें एक डीजल पंप लगा था । जो नाले से पानी खींचने के काम आता था । दो तरफ पैरे का ढेर था । उनका खेत काफी बड़ा था लगभग 10 एकड़ में फैला हुआ और उसका अधिकांश हिस्सा नाले के साथ लगा हुआ था ...

उन्होंने वहां जाकर बताया कि वास्तव में वह झोपड़ी उनका एक और साधना कक्ष था । जहां पर वे अपनी गुप्त साधनाएं किया करते थे । वहां पहुंचने के बाद नाले के पानी से हम लोगों ने नित्य कर्म तथा स्नान आदि संपन्न किया और उसके बाद भोलाराम जी के साथ उस झोपड़ी में पहुंचे.....

झोपड़ी मुश्किल से 10 फुट बाई 8 फुट की रही होगी । झोपड़ी में एक छोटा सा बक्सा रखा हुआ था और उस के ऊपर कुछ पूजन सामग्रियां भी रखी हुई थी । बक्से में मोटा सा ताला झूल रहा था ।

उस बक्से के ऊपर जो पूजन सामग्री रखी थी । उसमें एक देवी का चित्र था । वह चित्र बेहद अजीब सा था । उसमें ब्रह्मा विष्णु महेश और यमराज को एक पलंग के पाए की तरह दिखाया गया था और उसके ऊपर भगवान शिव लेटे हुए थे । उनकी नाभि से एक कमल बाहर की ओर निकला हुआ था और उस पर एक देवी विराजमान थी ।

इस प्रकार का चित्र मैंने पहले नहीं देखा था इसलिए मैं समझ नहीं पाया कि वह कौन सी देवी है । उन्होंने कक्ष में पहुंचने के बाद उनको प्रणाम किया और उनकी देखा देखी हम लोगों ने भी प्रणाम किया ...

उन्होंने उसके बाद उस देवी का संक्षिप्त पूजन संपन्न किया और फिर हम लोग वहीं कक्ष पर बैठे उन्होंने पूछा - क्या तुम इस देवी को जानते हो ?

हम दोनों ने ना में सिर हिलाया ...

उन्होंने बताया - इन्हें त्रिपुरसुंदरी कहा जाता है। यह तंत्र की अधिष्ठात्री देवी है। उन्हें प्रकारांतर से कामाख्या भी कहा जाता है। इनकी साधना के विषय में कहा गया है कि :-

॥ श्री सुंदरी साधन तत्पराणाम भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

अर्थात यह एकमात्र ऐसी साधना है जिसको करने वाले साधक के एक हाथ में भोग होता है और दूसरे हाथ में मोक्ष होता है।

यह साधना साधक को भौतिक जगत में पूर्णता प्रदान करती है। धनधान्य और गृहस्थ सुख से पूर्ण करती है। वही आगे चलकर आध्यात्मिक लाभ प्रदान करते हुए उसे पूर्णत्व या मोक्ष की ओर भी लेकर जाती है...

यह सबसे अंत में दी जाने वाली साधना है और गुरुदेव ने मुझे यह साधना प्रदान की थी।

भोलाराम जी अपने साधक जीवन के रहस्य को खोल रहे थे और हम लोग बैठकर सुन रहे थे । जितने सरल और सहज व्यक्तित्व के स्वामी थे । उतनी ही जटिल साधनाओं को उन्होंने संपन्न किया था । यह जानकर हम लोग आश्चर्यचकित थे .....

उन्होंने आगे बताया - यह साधना सबसे कठिन साधना है । इसमें किसी प्रकार की गलती या त्रुटि की संभावना नहीं रहती है और अगर गलती हुई तो साधक मानसिक रूप से विचलित भी हो सकता है । साधना काल में कई प्रकार की परेशानियां आती हैं और वह परेशानियां ऐसी होती है जिनको होता हुआ देखकर आपकी साधना खंडित होने की संभावना बनी रहती है ।

सुदामा ने पूछा - आप के साथ क्या हुआ था ?

थोड़ी देर सोचने के बाद वे बोले - जब इस साधना को मैंने प्रारंभ किया । उस समय मेरी आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य सी थी । मैंने बहुत संघर्ष पूर्ण जीवन व्यतीत किया है । यह साधना मैंने 3 महीने तक अर्थात 90 दिन तक की थी । इसका प्रारंभ मैंने माघ मास की

गुप्त नवरात्रि से किया था । माघ पूर्णिमा को त्रिपुरा सुंदरी की जयंती भी माना जाता है । इसी माह में वसंत पंचमी या कामदेव जयंती भी आती है । यह पूरा माह प्रकृति भी पूर्ण उल्लास के साथ रहती है ! बागों में फूल खिले रहते हैं ! साथ ही मौसम भी ऐसा होता है जो ना तो गर्म होता है और ना ही ठंडा ! मनभावन सा मौसम... मन को मथनी वाला मौसम अर्थात मन्मथ या कामदेव का मौसम .... यह पूरी सृष्टि मिथुन सृष्टि है । इसके अधिष्ठाता हैं कामदेव ! इस सृष्टि में जो भी सृजन है... जो भी नया पैदा हो रहा है... वह सब कुछ काम के अधीन है.... कहीं ना कहीं कोई न कोई पुरुष जीव और स्त्री जीव आपस में संबंधित होते हैं और एक नए जीवन की उत्पत्ति करते हैं और सृष्टि आगे की ओर बढ़ती है ।

इस पूरी लीला के पीछे कामदेव की उपस्थिति अनिवार्य होती है । जब तक काम नहीं होगा तब तक संभोग नहीं होगा और जब तक संभोग नहीं होगा तब तक सृजन नहीं होगा ....

इतना बताकर वे ठहरे और हम दोनों को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। उनकी आंखें बिलोरी थी। जब उन्होंने हमको देखा तो ऐसा लगा कि उन आंखों में कुछ अलग ही तेज उतर आया था। जैसे वे आंखें सीधे अंदर तक घुस जाएंगी। ऐसा प्रतीत होता था। शायद वे हमें और हमारे अंदर की संभावनाओं को जानने के लिए अपनी दिव्य दृष्टि से कुछ देखने का प्रयास कर रहे थे। भोलाराम जी के अंदर का गुरुत्व उस दिन हमने देखा। फिर उन्होंने काफी देर तक इस विषय पर और देवी त्रिपुर सुंदरी के विषय में बताया। हम लोग आनंद विभोर होकर सुनते रहे। ऐसा लग रहा था जैसे ज्ञान की गंगा बह रही हो और हम लोग उस में गोते लगा रहे हो। लगभग 2 घंटे तक उन्होंने त्रिपुर सुंदरी के विषय में बताया। उनके बीज मंत्रों का मतलब बताया और साधना के विषय में भी कई सारी बातें बताई.....

आखिर में अपनी उसी रहस्यमय हंसी के साथ फिस्स करके हंस दिए....

अब तक हम लोग भी भाँप चुके थे कि वह ऐसा सुनने वाले को गुमराह करने के लिए करते हैं ताकि वह उनकी वास्तविकता को ना समझ पाए ।

भोलाराम जी की त्रिपुर सुंदरी साधना

जैसे ही उनकी हंसी रुकी मैंने उनको कहा - अंकल जी ।

आपने अपने साधनात्मक अनुभव नहीं बताया...

वह काफी देर तक घुमाते रहे लेकिन हम लोग भी डटे रहे । 15:20 मिनट इधर उधर की बातें करने के बाद यह फिर वापस अपने अनुभव को बताने की लाइन पर लौटे ।

उन्होंने बताया - साधना का प्रारंभ बेहद शांत और सौम्य वातावरण में मैंने किया था । यह झोपड़ी उस समय की बनी हुई है । उस समय मेरी उम्र लगभग 27-28 साल की रही होगी । साधना करने के लिए यह जगह बिल्कुल किसी जंगल के बीच बने हुए आश्रम की तरह ही थी । क्योंकि उस समय यहां चारों तरफ जंगल ही जंगल थे । आबादी इतनी बड़ी नहीं थी और लोग इस तरफ आने से भी डरते थे । पूर्ण एकांत प्राप्त था । मैं बड़ी लगन के साथ रात को यहां बैठकर साधना करता था । 15-20 दिन तक साधना बहुत ही शांत

स्वरूप में चलती रही । उसके बाद मुझे कई प्रकार के अनुभव होने लगे । यह कमरा बेहद मादक खुशबू से भरा रहता । रात के समय अनेक प्रकार की आवाजें आती रहती थी । लगभग 30 दिन की साधना के बाद अचानक एक दिन .... एक दुर्घटना में मेरे बड़े भाई का देहांत हो गया ।

आप लोग जानते ही हैं कि किसी परिवार के सदस्य की मृत्यु हो जाने पर सूतक माना जाता है । पूजा-पाठ जैसे कर्म बंद कर दिए जाते हैं । हमारे गांव में भी यह मान्यता थी । इतना बताते बताते उनकी आंखें नम हो गई थी ।

मैंने पूछा - फिर तो आप की साधना खंडित हो गई ?

उन्होंने कहा - नहीं । उसके बावजूद मैंने अपनी साधना लगातार जारी रखी । दिन में सारे कार्यक्रम होते । रात को मैं अपनी साधना भी करता । इसकी वजह से मुझे घर वालों की फटकार भी पड़ती और आखिर जब मैंने उनकी बात नहीं मानी तो उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया उसके बाद मैं यहीं इसी झोपड़ी में रहने लगा । साधना चलती रही लेकिन भोजन आदि की व्यवस्था तो अब संभव नहीं थी क्योंकि घर वालों ने घर आने से मना

कर दिया था । लगभग दो-तीन दिनों तक मैंने बिना कुछ खाए पिए साधना की । चौथे दिन मेरी पत्नी चुपके से एक पोटली में खाना बांध कर छोड़ गई । भाई की तेरहवीं होते तक मुझे घर में घुसने नहीं दिया गया । भोलाराम जी आगे बोले - मुझ पर भी साधना का जुनून सवार था । हो सकता है कि पूर्व जन्म के संस्कार रहे होंगे । मैं अपने साधना में डटा रहा । इस प्रकार के अनेक परीक्षण चलते रहे । उस 90 दिन की साधना में कई अनुभूतियां हुई ।

जीवन के और परिवार के साथ-साथ मित्रों और रिश्तेदारों के अनेक प्रकार के कटु अनुभव भी शामिल रहे । तानों से लेकर गालियां तक सब कुछ सुनने का सौभाग्य भी मिला ...

उन्होंने मुझे काला जादू सीखने वाला से लेकर जितनी प्रकार की गालियां हो सकती थी सब दीं .....

बहुत दर्दनाक और पीड़ा भरी अवस्था से उन दिनों में गुजरा ।

कई बार मुझे भी लगता था कि कहीं मैं गलत तो नहीं कर रहा हूं ...

कई बार लगता कि मेरी साधना की वजह से तो भाई की मौत नहीं हो गई ....

कई बार लगता कि यह पागलपन तो नहीं है ...

फिर कहीं अंदर से आवाज आती ...कि .... नहीं .... तू सही मार्ग पर चल रहा है और मैं वापस अपने साधना वाले मोड़ पर आ जाता.....

मेरी युवावस्था थी ....
तो ....

जब बीच में पत्नी खाना देने या किसी अन्य काम से आती तो वासना का ज्वार भी हिलोरे मारने लगता था ।

बड़ी मुश्किल से मैं उस भावना को नियंत्रित कर पाता था । जैसे-जैसे साधना आगे बढ़ती , शरीर की गर्मी भी बढ़ती जाती थी । उसके साथ साथ बार-बार स्वयं के अनियंत्रित होने का एहसास भी होता था ।

गुरु कृपा से सब कुछ नियंत्रण में रहा । मेरी 90 दिन की साधना पूर्ण हो गई । प्रत्यक्षीकरण नहीं हुआ ।

मुझे ऐसा लग रहा था कि 90 दिन की साधना जैसे ही पूर्ण होगी । देवी साक्षात मेरे सामने प्रकट हो जाएगी । लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । रात के लगभग 1 बजे तक मंत्र जाप के बाद मैं हताश होकर इसी झोपड़ी में सो गया या यूं कहें कि झपकी लग गयी ।

सुबह ब्रह्म मुहूर्त का समय रहा होगा । यही कोई चार बजे होंगे ..... जब मेरी नींद खुली ।

उन्होंने हमारी तरफ गौर से देखते हुए कहा - तुम यकीन नहीं करोगे .... जो मैंने उस समय देखा ।

मैंने उत्सुकता के साथ पूछा - आपने क्या देखा ? क्या देवी प्रकट हो गई ?

वह फिर से हंस दिए । उनकी आंखें गीली हो गई .... उनमें से दो बूंद आंसू बाहर निकल पड़े । वे बोले - तुम विश्वास नहीं करोगे ! मैंने देखा कि ... मेरे आसन पर .... मेरे गुरुदेव..... प्रातः स्मरणीय परमहंस स्वामी

निखिलेश्वरानंद जी .... बैठकर मंत्र जाप कर रहे थे । मैं अवाक रह गया । मुझे समझ में नहीं आया कि मैं सपना देख रहा हूं या हकीकत है ।

मेरे साधना कक्ष में !

मेरे आसन पर !

मेरे गुरुदेव !

जिनको मैंने गृहस्थ रूप में देखा था !

वह अपने पूर्ण सन्यास रूप में बैठे थे !

और मंत्र जाप कर रहे थे....

यह झोपड़ी उनके गहन गंभीर मंत्रोच्चार से गूंज रही थी । लगभग आधा घंटे तक में उन्हें स्तब्ध बैठकर देखता रहा । उसके बाद वह हुआ .....

जो मेरे लिए मेरे जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य था ।

मेरा जीवन धन्य हो गया....

मेरे सामने साक्षात भगवती त्रिपुर सुंदरी का बिम्ब स्पष्ट हो रहा था .....

उन्हें षोडशी भी कहा जाता है .... अर्थात 16 वर्ष की ।

मेरे सामने खड़ी थी ....

एक अत्यंत दिव्य सौंदर्य की स्वामिनी ...
लगभग 15-16 वर्ष की अवस्था का अनुभव कराती हुई युवती .....

जिसे देखने पर ऐसा प्रतीत होता था ....
जैसे संपूर्ण ब्रह्मांड का सौंदर्य उसी के अंदर समा गया हो .....

वह खड़ी थी .....
गुरुदेव उनके चरणों में दंडवत मुद्रा में लेटे थे....

कुछ क्षण तक मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उन्हें देखता रहा ...

ऐसा अलौकिक सौंदर्य .....
मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था ....

फिल्मों की हीरोइने और विश्व सुंदरियां तो उस सौंदर्यमयी युवती के पांव की धूल भी नहीं थी ...

ऐसा दिव्य सौंदर्य कि आंखें चुन्धिया जाए.....

ऐसा दिव्य सौंदर्य कि व्यक्ति स्तब्ध हो जाए.....

ऐसा दिव्य सौंदर्य कि व्यक्ति गतिहीन हो जाए...

ऐसा दिव्य सौंदर्य जिसे देखने मात्र से ऐसा लगे की सहज ही अमृत की वर्षा हो रही हो ....

और आप उसमें आप्लावित होते हुए बैठे हैं .....

मैं मूढ़मति .....
मुंह फाड़ कर .....
उन्हें देखता हुआ....
स्तब्ध हो कर देखता हुआ....
अभिभूत होकर देखता हुआ....
आश्चर्यचकित होकर देखता हुआ...
आनंद के साथ देखता हुआ.....

अविश्वास के साथ देखता हुआ ... बैठा रहा.....

फिर थोड़ा सही हुआ तो मैं भी उनके चरणों में दंडवत मुद्रा मे लेट गया ...

बेहद मीठी ध्वनि मे देवी के मुखारविंद से शब्द गुंजरित हुआ - "आशीर्वाद है वत्स" और फिर वे लुप्त हो गई .....

मेरी आंखें आंसुओं से भरी हुई थी । मैं गुरुदेव के चरणों में गिरकर रोने लगा - महाप्रभु ! आपको कष्ट करना पड़ा ।

उन्होंने मुझे उठाया और अपने सीने से लगा लिया । उसके बाद वे हँसे और बोले - शिष्य को सफलता तक पहुंचाना गुरु का कर्तव्य है । तुमने जितनी एकाग्रता और भावना के साथ साधना की है वाह वास्तव में अद्भुत है । उसमें जो भी कमी बेशी थी उसे पूरा करने के लिए मैं आया था । यह गुरु होने के नाते मेरा उत्तर दायित्व है कि मैं अपने शिष्यों को उनकी साधना में सफलता प्राप्त करने में हर प्रकार से सहायता करुं । तुम सौभाग्यशाली हो जो भगवती का सानिध्य तुम्हें प्राप्त हुआ है, मेरा आशीर्वाद है.... इतना कहकर वह भी लुप्त हो गए.....

गुरु शिष्य संबंध

इतना बोलते बोलते भोलाराम जी अत्यंत भावुक हो गए और फफक फफक कर रो पड़े ..... उनकी रुलाई देखकर हम लोगों की भी आंखें भर आई... काफी देर के बाद वे संयत हुए ।

फिर वे बोले - आप कल्पना नहीं कर सकते कि उस समय मुझे कैसा महसूस हुआ । उस दिन के बाद मुझे यह समझ में आ गया कि गुरु और शिष्य का संबंध क्या होता है । साधना जगत में गुरु और शिष्य का संबंध एक माता और पुत्र के जैसा होता है । पुत्र कष्ट में हो..... पुत्र ने पुकार लगाई हो..... तो मां सहज ही उसकी ओर दौड़ पड़ती है । पुत्र कमजोर पड़ रहा हो , असहाय महसूस कर रहा हो तो मां हमेशा उसे ढांढस बन्धाती है ... उसे प्रेरित करती है.... आगे बढ़ने के लिए .... दोनों के बीच में रक्त का संबंध होता है ।

रक्त का संबंध न होने के बावजूद ठीक यही काम साधना के क्षेत्र में गुरु करता है ..... इसलिए गुरु और शिष्य का संबंध सबसे दिव्य और अलौकिक माना गया है .... जिसे हर संबंध से ऊपर माना गया है ...

जिह्वा मे सरस्वती स्थापना

उस समय तक दोपहर के 11 या 11:30 बजे होंगे । सुबह से हम लोगों ने कुछ खाया नहीं था ... तो भूख लग रही थी लेकिन बातें इतनी मजेदार चल रही थी कि भूख का एहसास नहीं हो रहा था । थोड़ी देर के बाद वे संयत हुए ।

उन्होंने कहा - मैं तुम्हें एक विशेष कार्य से यहां पर लेकर आया हूं । वर्तमान समय में साधना के प्रति लोगों में उत्साह बेहद कम हो गया है । विशेष रूप से गृहस्थ व्यक्ति बेहद आलसी और कामचोर हो गया है । एक अगरबत्ती को भगवान की फोटो के सामने घुमा देने को वह अपनी पूजा समझ लेता है । वह भगवान से अपेक्षा करता है कि वह उसकी सारी समस्या को हर लेंगे और उसकी जेब नोटों से भर देंगे । मंत्र जाप ध्यान योग यह सब हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग रहा है । चाहे व्यक्ति सन्यास में हो या गृहस्थ में हो ! वह इनका अनुशीलन करता रहा । आज परिस्थितियां बदल गई है ...

मुझे मेरे गुरु ने साधनात्मक ज्ञान दिया है और मेरी जिम्मेदारी है कि इच्छुक और योग्य साधकों को इस ज्ञान को प्रदान करू । तुम दोनों की लगन को देखकर मैं प्रभावित हूं और मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि तुम साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ सकोगे । आज मैं तुम्हारे कंठ में सरस्वती की स्थापना करूंगा ताकि तुम मंत्रों का सही उच्चारण कर सको और मंत्रों की तथा देवता की कृपा तुम पर हो सके।

इसके बाद उन्होंने हम दोनों को अपने सामने बैठाया और मंत्र उच्चारण प्रारंभ किया । लगभग आधे घंटे तक उन्होंने विभिन्न मंत्रों का उच्चारण किया होगा । उसके बाद उन्होंने हमारा जिह्वा अंकन किया ।

यह एक प्रक्रिया होती है जिसमें जीभ पर सरस्वती देवी का बीज मंत्र लिखा जाता है । इसके मूल में भावना यह होती है कि साधक के जिह्वा में सरस्वती की स्थापना की जाए ताकि वह इस विद्या को और रहस्य को पूर्ण रूप से समझ सके । तंत्र साधना में मंत्रों का उच्चारण और उनकी ध्वनि का भी महत्व होता है । विद्या की अधिष्ठात्री देवी भगवती सरस्वती को माना

जाता है । इसलिए उनके बीज मंत्र को लिखकर उन्हें सादर आमंत्रित किया जाता है कि वह साधक के जीभ को इतना सामर्थ्य प्रदान करें कि वह विभिन्न मंत्र बीजों का उच्चारण सही ढंग से कर सकें ।

आप जानते ही होंगे कि संस्कृत के मंत्रों का उच्चारण या यूं कहें कि उनके अक्षरों का उच्चारण हमारी जीभ की स्थिति पर निर्भर करता है । कई अक्षर ऐसे हैं जिनका उच्चारण जीभ होंठ या तालू पर स्पर्श करें । तब होता है । कई अक्षर ऐसे हैं जिनका उच्चारण तब होता है जब हमारी जीभ हमारे दांतो में स्पर्श करती है । हर शब्द जीभ के अलग-अलग स्थानों पर स्पर्श होने या उसकी आकृति पर निर्भर करता है । अतः जीभ वह प्रमुख अंग है जो विभिन्न शब्दों की उत्पत्ति का मूल है । उसी के ऊपर भगवती सरस्वती के बीज मंत्र को लिखकर उनकी स्थापना की जाती है । ताकि उच्चारण स्पष्ट और उपयुक्त हो .....
भले ही हम अंग्रेजी भाषा को वैज्ञानिक मानते हो । लेकिन जितना विस्तृत व्यापक और स्पष्ट व्याकरण संस्कृत का है उतना शायद ही किसी और भाषा का

हो । यही नहीं संस्कृत के अक्षरों का उच्चारण करने में जीभ की जितनी विभिन्न अवस्थाएं बनती हैं या उसमें जितना लोच या फ्लैक्सिबिलिटी होती है उतनी शायद ही किसी और भाषा में होती हो । यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी सनातन संस्कृति में एक ऐसी दिव्य भाषा उपलब्ध है । इसीलिए संस्कृत को देव भाषा भी कहा जाता है ।

यह प्रक्रिया पहले गुरुकुल में विद्यार्थियों के शिक्षारंभ से पहले भी की जाती थी । इसके लिए वर्ष भर में दो तिथियां विशेष रूप से निर्धारित है । पहली है बसंत पंचमी तथा दूसरी है विजयादशमी । इसकी प्रक्रिया बेहद सरल होती है । गुरु या जो भी व्यक्ति इस प्रक्रिया को संपन्न कर रहा होता है वह पहले 11 माला या अपनी क्षमता अनुसार सरस्वती मंत्र का जाप करता है । उसके बाद जिह्वा पर सरस्वती देवी के बीज मंत्र को केसर से लिखता है । सरस्वती देवी का बीज मंत्र है -

॥ ऐं ॥

जिह्वा अंकन के बाद उन्होंने हमें कहा कि आधे घंटे तक कोई बात नहीं करनी है । बिल्कुल मौन रहना है । और देवी सरस्वती के मंत्र

॥ ऐं ऐं ऐं सरस्वत्यै ऐं ऐं ऐं नमः ॥

का जाप करते रहना है वह भी मानसिक रूप से ॥

हम लोग आधे घंटे तक देवी मंत्र का उच्चारण मानसिक रूप से करते रहे । भोला राम जी भी हमारे साथ बैठकर मंत्र उच्चारण करते रहे । यह सब करते करते भूख बड़े जोर की लग गई थी । वहां से घर तकरीबन तीन-चार किलोमीटर जरूर रहा होगा । मैं मन ही मन सोच रहा था कि कुछ खाने के लिए मिल जाता तो मजा आ जाता ।

शायद वह हमारे भाव को भाप गए और पूछा - जोर से भूख लगी है क्या ?

हम दोनों ने सहमति में सिर हिलाया । हमने सोचा कि अब वह घर चलने के लिए कहेंगे और घर जाकर भोजन किया जाएगा ।

लेकिन वैसा कुछ नहीं हुआ....

ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ ...

लेकिन जो घटित हुआ । वह अद्भुत और आश्चर्यजनक था । कुछ ऐसा जो हम लोगों ने आज तक नहीं देखा था ।

भोलाराम जी ने हवा में अपना हाथ लहराया और मन ही मन कुछ बुदबुदाए....

फिर उन्होंने हमें आंख बंद करके बैठने के लिए कहा । साथ ही निर्देश भी दिया कि जब तक मैं नहीं बोलूंगा किसी हालत में आंख नहीं खोलना है । हम लोग आंख बंद करके बैठ गए ।

लगभग 1 या 2 मिनट हम लोग आंख बंद करके बैठे होंगे । हल्की-हल्की पायल की आवाज सुनाई देने लगी । जैसे कोई हमारे सामने चल रहा हो । बड़ी इच्छा हुई कि आँख खोल कर देख लूं । लेकिन उन्होंने आदेश दिया था । इसलिए खोल कर नहीं देखा ।

अचानक कमरे में रोटी और साग की खुशबू आने लगी । एकदम ताजी फूली हुई रोटियां और भाजी की खुशबू ....

बिलकुल वैसे ही जैसे थाली में परोसे जाने पर उसके सामने बैठने से आती है ।

उसके बाद पायल की आवाज गायब हो गई ...
तभी भोलाराम जी की आवाज आई - आंखें खोल लो ...
जो सामने दिखा ....
वह अद्भुत था ...
हम तीनों के सामने पत्तल बिछा हुआ था और उसमें रखी थी चार चार रोटियां और चने का साग ।

बड़े जोर की भूख लगी थी ।
इसलिए हम दोनों टूट पड़े .....
और सारा भोजन उदरस्थ कर लिया...
लेकिन भूख खत्म नहीं हुई थी ...
हम लोगों को देखकर भोलाराम जी यह बात समझ गए उन्होंने फिर से आंखें बंद करने के लिए कहा ।
कुछ देर मे फिर से पायल की आवाज आने लगी । और 2 मिनट के बाद उन्होंने फिर से आंख खोलने के लिए कहा अब की बार पत्तल में सूजी का हलवा परोसा हुआ था । फिर हम लोग उस पर टूट पड़े ...
और इस बार पेट भर गया .....

जब पेट भर गया तो ध्यान आया कि यह आया कहां से ... क्योंकि ऐसा भोजन तो माताजी भी नहीं पकाती थी । अद्भुत स्वादिष्ट भोजन॥

हमने उनसे जानना चाहा । वह अपनी उस रहस्यमय हंसी के साथ इस बात को भी टाल गए ।
काफी समय बाद उन्होंने बताया कि यह अन्नपूर्णा सिद्धि से संभव है । फिर उन्होंने उसकी साधना भी करवाई वह फिर कभी....

लगभग 3 बजे हम लोग वापस घर लौट आए । वरुण और रमेश इंतजार में बैठे थे । भोलाराम जी ने सारी घटना को गुप्त रखने का निर्देश दे दिया था । उन्होंने कहा कि अभी वरुण और रमेश को परिपक्व होने में समय लगेगा । उसके बाद उनको भी इस प्रक्रिया को यह प्रदान करेंगे । उन्होंने एक बात यह भी कहीं की जिस प्रकार से एक स्त्री अपने योनि की गोपनीयता को सुनिश्चित करती है कि वह किसी के सामने प्रदर्शित ना हो । ठीक वैसे ही एक तंत्र साधक को अपनी साधनातमक गोपनीयता को बनाए रखना चाहिए ।

इस प्रकार तंत्र की जादुई दुनिया से निकलकर हम लोग वापस अपनी वास्तविक दुनिया में आ चुके थे और पेट भी पूरा भर चुका था। इसलिए चारपाई पर पसरते ही नींद आ गई। शाम पांच बजे तक हम लोग सोते रहे ...

आरती और वह नृत्य

उन दिनों 6:30 बजे के आसपास अंधेरा हो जाता था । उसके बाद हम लोग गुरु आरती तथा ओम जय जगदीश हरे वाली आरती करते थे । यह रोज का क्रम था .... इतना करने के बाद शाम का भोजन अगर कोई करना चाहता था तो वह करता था और उसके बाद अपनी अपनी साधना में लग जाते थे ।

आरती के दौरान घंटी होती थी और गोल गोल पीतल वाला दोनों हाथ से टकराकर बजाने वाला जो बाजा होता है वह था । इसके अलावा कोई वाद्य यंत्र नहीं होता था । लेकिन उस दिन भोलाराम जी अपने कमरे से एक डमरु निकाल लाए थे ।

डमरु भगवान शिव का वाद्य यंत्र है । डमरु की ध्वनि अगर आपने सुनी हो तो यह कुछ-कुछ भांगड़े के जैसा आभास आपको देता है । भांगड़े का म्यूजिक अगर आप सुने तो आपके अंदर अपने आप थिरकन पैदा हो जाती है । डमरु अगर सही ढंग से बजाया जाए तो आप अपने हृदय के अंदर तक उसके स्पंदन को महसूस कर सकते हैं .....

उस दिन जब आरती चल रही थी । भोलाराम जी ने अपना डमरु बजाना चालू कर दिया । तब ! सबसे पहले वरुण नाचने लगा .... उसके बाद रमेश और फिर सुदामा जी भी नाचने लगे । मैं थोड़ा संकोची किस्म का प्राणी था । नाचना मेरे स्वभाव में किसी कोने से नहीं आता था । यूं कह लीजिए कि मैं जिंदगी में कभी भी किसी भी अवसर पर नहीं नाचा था । बचपन में कभी ऐसा कुछ घटित हुआ हो ऐसा भी मुझे याद नहीं था ....

उस दिन जब वे तीनों नाच रहे थे तब मैं काफी देर तक उनको देखता रहा । लगभग 10 मिनट नाचने के बाद वे लोग थकने लगे । अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर किसी का प्रवेश हो गया हो । उसके बाद लगभग आधे घंटे तक मैं बेतहाशा नाचता रहा । बाकी लोग मुझे देखते रहे .....

भोलाराम जी ने उनको चुप रहने का संकेत किया और मुझपर बराबर उनकी दृष्टि बनी रही । ऐसा लग रहा था जैसे उनकी आंखों की पुतलियां मुझे नृत्य करने के लिए विवश कर रहीं हो....

आधे घंटे के उस नृत्य के दौरान में पूरे कमरे में इधर-उधर कूदकर नाचता रहा ...

अंत में एक कुर्सी पर निढाल हो गया.....

फिर उन लोगों ने मुझे पानी पिलाया और मैं नॉर्मल हुआ । भोलाराम जी ने अपना हाथ मेरे सिर पर स्पर्श कराया और डमरु लेकर अपने कमरे में चले गए ।

मैं 10 मिनट के लिए अपनी चारपाई पर जाकर लेट गया । कमरा अष्टगंध की खुशबू से महक रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्ति वहां पर आई हो और अपने अस्तित्व का एहसास करा रही हो ।

मुझे लगा कि यह खुशबू मेरे शरीर से आ रही है । मैंने अपने हाथ को सूंघ कर देखा । फिर मुझे लगा कि मेरे गले के पास से खुशबू आ रही है । वहां भी सूंघ कर देखा... लेकिन जब मैंने माला को सूंघ कर देखा... तब समझ में आया कि खुशबू वास्तव में माला से आ रही थी....

बेहद तेज खुशबू मेरी रुद्राक्ष की माला में से आ रही थी । सबसे दिलचस्प बात यह थी कि उसके 108 दाने थे । उस के अलग-अलग हिस्से में अलग-अलग किस्म की खुशबू आ रही थी । जिसे मैंने सुदामा जी को भी सुंघाया । उन्होंने कहा कि वास्तव में अलग-अलग किस्म की खुशबू आ रही है । अगले 15 दिनों तक मेरी माला में खुशबू आती रही और उसके बाद धीरे-धीरे समाप्त हो गई ...

खैर.....

जब आप मंत्र जाप या साधना करते हैं तो इस प्रकार के अनुभव आपको उत्साहित करते हैं । यह बताते हैं कि आपकी साधना सही ढंग से चल रही है ।
साथ ही उस ईश्वरीय अस्तित्व !
उस दिव्य सत्ता ! के होने का प्रमाण भी देती है ....
जिससे आप और ज्यादा लगन के साथ साधना करते हैं ।
हां ! इसके लिए दृढ़ निश्चय और विश्वास के साथ अपनी क्षमता अनुसार बैठकर मंत्र जाप करना होता है ।

किसी को यह अनुभव दस दिन में हो जाते हैं । किसी को एक महीना लग जाता है और किसी को चार महीने लग जाते हैं । लेकिन लगभग हर साधक को इस प्रकार के अनुभव अवश्य होते हैं ....

वह रहस्यमय युवती

रात 9:30 बजे फिर मैं और सुदामा जी छत पर बैठे । सुदामा जी बड़े दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे । अगर वो ठान लेते की बैठना है तो बैठकर ही छोड़ते.... उनके साथ रहते रहते मुझ में भी थोड़ी सी दृढ़ता आ गई थी । मंत्र जप प्रारंभ हुआ और जैसा कि मैंने आपको बताया था । भैरव साधना उग्र साधना है । इसलिए मंत्र का जाप करते करते शरीर में भी गर्मी आती है । उच्चारण में भी तेजी आती जाती है । यह एक सहज स्वाभाविक प्रक्रिया जैसे संपन्न होती है ... और साधनात्मक लिहाज से यह सही भी है ....

भोलाराम जी के घर में एक देसी कुत्ता भी था । जो काफी हल्ला हट्टा कट्टा हुआ करता था । उसका नाम था भैरू । संभवतः भैरव के नाम पर ही उन्होंने इसका नाम भैरू रखा होगा । मंत्र जप प्रारंभ होते ही वह हमारे सामने आकर बैठ गया । ऐसा लग रहा था ... जैसे वह मंत्र जाप स्वीकार करने के लिए आकर बैठा हो ।

रात के लगभग 10 बजे वह आकर बैठा होगा और उसी मुद्रा में 11 बजे तक बैठा रहा । लगभग 11 बजे उसका आकार बढ़ने लगा और बढ़ते बढ़ते वह लगभग एक शेर के आकार का हो गया । उसके बाद वह बड़े जोर से भौंका , उसे भोकना कहना उपयुक्त नहीं होगा । बल्कि ऐसा कहिए की दहाड़ लगाई । हम दोनों को ऐसा प्रतीत हुआ कि कान के पर्दे फट जाएंगे । हमारे जस्ट सामने वह बैठा हुआ था मुश्किल से 1 फीट की दूरी रही होगी । उसके बाद लगभग आधे घंटे तक तक वह हमारे चारों तरफ घूम घूम के उसी प्रकार से बीच-बीच में भौंकता..... फिर वह गायब हो गया ।
डर लगता रहा ... लेकिन बैठे रहे .... मंत्र जाप चलता रहा.... वह रात इसी प्रकार से गुजर गई । उसके बाद कोई विशेष घटना नहीं हुई । एक बजे जब हम लोग मंत्र जाप करके नीचे उतर रहे थे तो हम लोगों ने देखा की कुए पर एक युवती निर्वस्त्र अवस्था में नहा रही है .....

जैसा कि आप लोग भी जानते हैं कि पुरुष देखने का बड़ा शौकीन होता है और हम लोग भी अपवाद नहीं थे । तो वही ठिठक कर देखने लगे ....

आमतौर पर अगर किसी युवती को आप निर्वस्त्र अवस्था में गलती से भी देख ले तो वह शरमा कर अपने वस्त्र पहनने या छुपने की कोशिश करती है ..... लेकिन वह युवती हमें देखने के बावजूद पूरी मस्ती से कुएं से पानी निकाल निकाल कर स्नान करती रही ....

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था ....

लेकिन !

सुदामा जी के मन में शायद यह बात खटकी कि रात के एक बजे यहां पर कोई स्नान नहीं करता है ... यह यहां पर स्नान कर रही है और झिझक भी नहीं रही है .... तो अवश्य कोई मायाजाल होगा .... जैसे ही यह बात उनके दिमाग में आई । उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और सीढ़ियां उतरने लगे । वह मेरे से हट्टे कट्टे थे तो मैं उनके साथ खिचकर नीचे आता चला गया.... मेरी आने की

रत्ती भर भी इच्छा नहीं थी लेकिन वह मुझे खींच कर नीचे ले आए ।

सीढ़ियां उतरते उतरते मुझे किसी सम्मोहन के टूटने जैसा एहसास हुआ ..... तब मुझे भी लगा कि हां यह तो कुछ गड़बड़ थी । नीचे आकर हम लोग गुरु चित्र के सामने प्रणाम करके क्षमा मांग कर के अपने बिस्तर पर सो गए ।

नवमी की रात्रि

सप्तमी और अष्टमी की रात्रि भी इसी प्रकार किसी विशेष अनुभव के बिना निकल गई । भोलाराम जी ने कहा था कि विजयादशमी के दिन पूर्णाहुति की जाएगी ।

दो दिन किसी प्रकार का अनुभव नहीं हुआ था इसलिए रमेश और वरुण भी पहले की अपेक्षा शांत थे । नवमी की रात्रि को हम लोग फिर से मंत्र जाप करने के लिए बैठे । पोजीशन लगभग वैसी ही थी । मैं और सुदामा जी छत पर और रमेश और वरुण नीचे कमरे में ...

नवमी की रात जैसे ही हम लोग छत पर पहुंचे । गांव के कुत्ते समवेत स्वर में चिल्लाने लगे । अगर आप रात को किसी ऐसी जगह पर जाएं ... जहां पर कुत्तों का समूह रहता हो .... तो आपको इस प्रकार की ध्वनिया सुनाई देंगी ।

कुत्ते एक दूसरे के ऊपर भौंकने वाली प्रक्रिया रात में संपन्न नहीं करते । रात में वे शांति से बैठे रहते हैं या लेटे रहते हैं ...

अचानक से एक कुत्ता खड़े होकर रोने जैसी आवाज निकालता है और सारे कुत्ते उसको फॉलो करते हैं ..... सारे के सारे कुत्ते एक ही सुर में रोने जैसी आवाज निकालते हैं ।

वह आवाज बड़ी ही दुखद होती है ... ऐसा माना जाता है कि जब कोई नकारात्मक शक्तियां उनको दिखाई देती हैं तब वे इस प्रकार का रुदन करते हैं । या फिर किसी की आसन्न मृत्यु हो .... तब भी वह इस प्रकार का रुदन करते हैं । इस बात की प्रमाणिकता के बारे में मैं कह नहीं सकता क्योंकि मैंने इसे अनुभव नहीं किया है....
कुत्तों के रोने की आवाज लगभग 5 मिनट तक चलती रही ..... उसके बाद वे शांत हो गए ।

मंत्र जाप चालू था ..... धीरे-धीरे उसकी तीव्रता बढ़ती जा रही थी...

भोलाराम जी बीच-बीच में साधना के विषय में कुछ नई बातें भी बताते थे । उन्होंने कुछ मुद्राएं भी सिखाई थी । जिसको साधना के पहले करना था और मंत्र जाप के

दौरान भी करना था। हम दोनों उन मुद्राओं को दिखाकर मंत्र जाप चालू कर चुके थे.....

मुद्राएं हाथ से दिखाई जाती हैं और उनका तंत्र साधना में विशेष महत्व होता है। अलग-अलग देवी-देवताओं के लिए अलग-अलग प्रकार की मुद्राएं प्रदर्शित करने का विधान है। यह मुद्राएं हाथ की उंगलियों के अलग-अलग प्रकार की संरचना बनाकर की जाती है। इनमें से एक मुद्रा है प्रणाम। जिसमें हम एक दूसरे को प्रणाम करते हैं। कुछ मुद्राएं बाबा रामदेव ने अपने योगासनों के दौरान पूरे भारत को सिखाई है उनमें से एक मुद्रा है ध्यान मुद्रा। जिसमें अंगूठे और तर्जनी को आपस में स्पर्श कराया जाता है। ऐसा माना जाता है कि हाथ की उंगलियां पंच तत्वों का प्रतीक है ... उनके अलग-अलग कंबीनेशन बनाए जा सकते हैं। यह अपने आप में व्यापक और विस्तृत विज्ञान है। जिस पर अन्वेषण किया जा सकता है...

मुद्राओं के प्रदर्शित करने से संबंधित देवी या देवता ज्यादा शीघ्रता से आकर्षित होते हैं या प्रसन्न होते हैं। हम लोगों ने मुद्राएं प्रदर्शित की और मंत्र जाप चालू

कर दिया । मंत्र जाप करते करते धीरे-धीरे हम लोगों की आवाज बढ़ने लगी जैसा कि रोज होता था ॥

ग्यारह बजे का समय रहा होगा अचानक वातावरण फिर से बदलने लगा .... एक अजीब सा भारीपन पूरे वातावरण में महसूस होने लगा... यह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसा श्मशान में महसूस होता है ...

शमशान अपने आप में सभी शक्तियों का पीठ माना जाता है । वहां की हवा में भी एक प्रकार की विचित्रता रहती है । अगर आप किसी दिन दोपहर को शमशान में जाकर बैठे हैं और कोई अज्ञात शव .... जिसको आप ना जानते हो ..... वह जल रहा हो और कुछ क्षण आप आंख बंद करके बैठे ..... महाकाली को याद करें तो आपको कुछ अलग सा एहसास अवश्य होगा .... संभवत इसी कारण अघोर साधक श्मशान में ही साधनाएं संपन्न करते हैं...
ठीक वैसा ही एहसास होने लगा था.... धीरे-धीरे वह भारीपन बढ़ता जा रहा था....
पूरा वातावरण रहस्यमय सा होने लगा था ।
कुछ घटित होने वाला है ऐसा महसूस हो रहा था

कुछ रहस्यमय । कुछ अद्वितीय । कुछ नया कुछ अप्रतीक्षित .... घटित होने की संभावनाओं को इन उपक्रमों के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहा था..... कुछ डर कुछ जिज्ञासा और कुछ संशय की मनोस्थिति लेकर हम लोग भी किसी अघटित घटना के घटने की प्रतीक्षा कर रहे थे.....

पहले धीमी धीमी हवाएं चलने लगी और धीरे-धीरे उनका वेग भी बढ़ने लगा .....
मध्यम गति से चलने वाली हवाएं धीरे-धीरे उग्र होती चली गई और तेज तेज हवाएं चलने लगी । हम लोग छत में बैठे थे इसलिए ज्यादा एहसास हो रहा था ।
पेड़ों के पत्ते जो हौले हौले हिल रहे थे ..... वह अब जोर-जोर से हिल रहे थे ..... कुछ समय बाद शाखाएँ भी हिलने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे हवा उन पेड़ों को काटकर ले जाएगी ... उसका प्रभाव इतना तेज था कि ऐसा प्रतीत होता था जैसे तूफान आ गया हो ....

आधे घंटे तक वैसी ही स्थिति रही और हम लोग मंत्र जाप करते रहें । हवाएं इतनी जोर से चल रही थी कि हमारे आसन तक फड़फड़ा रहे थे । हमारे कपड़े उड़ रहे थे । धोती तो बरकरार थी .... लेकिन जो चादर हम लोगों ने ओढ़ी हुई थी ... वह उडकर छत के दूसरे कोने में पड़ी हुई थी ....

अगर हम बैठे नहीं होते तो शायद धोती भी उड़ जाती ..... इतनी तेज हवा चल रही थी ....

छत के बाई तरफ खाली जगह थी । जहां पर पैरा आदि पड़ा हुआ था । उसी जगह के आखरी कोने पर एक बड़ा सा सागौन का पेड़ था । सागौन की लकड़ी काफी अच्छी कीमत पर बिकती है क्योंकि उसका तना सीधा होता है । पुराना होने के साथ-साथ उसकी मोटाई भी बढ़ती जाती है साथ ही कीमत भी....

वह पेड़ भी हिल रहा था .....

हमारे देखते-देखते वह पेड काफी जोरों से हिलने लगा .....

कुछ देर मे एक जोरदार आवाज के साथ टूट गया और जमीन पर आ गिरा । ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई छोटा-मोटा बम फट गया हो...

उसके टूट कर गिरने की धमक छत में भी महसूस हुई संभवतः नीचे बैठे हुए लोगों को भी महसूस हुई होगी ....

डर लग रहा था .....
उठ कर भागने की इच्छा भी हो रही थी ....

लेकिन !

अभी तक हुई घटनाओं के बाद मन में यह विश्वास भी था कि सब कुछ अच्छा ही घटित होगा ..... इसलिए डट कर बैठे रहे ।
हवाओं का उसी प्रकार से प्रवाह जारी रहा....
पेड़ों का टूटना स्वयं में इस बात का प्रमाण है कि हवा कितनी तेज रही होगी ...
कुछ समय के अंतराल में आसपास के कुछ और पेड़ भी टूटकर गिरे...

उसके बाद ..... बिजलियां कड़कने लगी ।

बारह साढ़े बारह बजे तक बारिश भी चालू हो गई ....

डरते ..... सहमते ..... मन में विश्वास का दीपक जलाए..... हम लोगों का मंत्र जाप भी जारी था ।

आवाज में जो तीव्रता पहले थी वह डरने के कारण शायद थोड़ी मंद हो चुकी थी ॥
लेकिन मंत्र जाप निरंतर जारी था.....

आसन शरीर कपड़े सब भीग कर पानी से तरबतर हो चुके थे । बिजली का कड़कना भी जारी रहा । लगभग आधा एक घंटे तक यही स्थिति रही होगी । इसी तरह से हम लोगों का मंत्र जाप पूर्ण हो गया ...

मंत्र जाप की पूर्णता के साथ .....

सामने एक धुए का विशाल बादल प्रकट हो गया .... वह धीरे-धीरे रूप लेने लगा ....

सारा वातावरण स्तंभित और शांति हो गया था ..... ऐसा प्रतीत हो रहा था । जैसे किसी कार्यालय में वहां

का सर्वोच्च अधिकारी आकर खड़ा हो गया हो और सारे लोग सावधान की मुद्रा में पिन ड्रॉप साइलेंस बना कर खड़े हो.....

उस बादल का आकार कम से कम 25-30 फीट का जरूर रहा होगा । उसका ऊपरी हिस्सा देखने के लिए गर्दन पूरी पीछे मुड़ जाती थी .....

इसी से आप उसके ऊंचाई का अंदाज लगा सकते हैं ।

वह आकृति धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगी .....

अत्यंत विशाल सिर .....

रूखे रूखे मोटे मोटे बाल ..... जो कंधों तक फैले हुए थे ।

दिप दिप करती हुई आंखें ..... जिनसे अग्नि का प्रवाह सा होता हुआ प्रतीत होता था ।

बड़े-बड़े कान ..... जिनमें मोटे मोटे कुंडल लटके हुए थे ।

चौड़े कंधे ..... मोटी मोटी मजबूत बाहें ।

एक हाथ में चमचमाता हुआ विशालकाय त्रिशूल ....
एक हाथ में खप्पर धारण किए हुए ....

वह आकृति धीरे-धीरे स्पष्ट हो रही थी । उसका आकार भी धीरे-धीरे बढ़ रहा था ऐसा लग रहा था जैसे वह संपूर्ण आकाश में विस्तृत हो गया हो....

हम दोनों आंखें फाड़ फाड़ कर उसे देख रहे थे ।
यह स्थिति लगभग 5 या 10 सेकंड रही होगी और उसके बाद हम दोनों अपने अपने आसन पर अचेत होकर गिर पड़े.....

रात भर हम दोनों छत पर ही अचेत पड़े रहे... संभवत: उस दिव्य दर्शन की वजह से और उसका तेज सहन करने की वजह से हम लोग अचेत हो गए थे...

सुबह जब सूरज की रोशनी हमारे ऊपर पड़ी.....
तब हमारी नींद या बेहोशी जो आप कह ले.... वह खुली....

उसके बाद हम दोनों नीचे उतरे । भोलाराम जी सामने ही खड़े थे । हम लोगों ने उनके चरण स्पर्श किए । उन्होंने आशीर्वाद दिया और हम दोनों को गले लगा लिया । संभवतः वे रात की घटनाओं को भाँप गए थे और उससे प्रसन्न थे ।
हम लोग कमरे में पहुंचे तो वरुण और रमेश दोनों खर्राटे मार रहे थे । हम दोनों भी बिस्तर पर लुढ़क गए और लगभग 10 बजे तक सोते रहे ।

विजयादशमी थी .....

आज पूर्णाहुति होनी थी । जिसके लिए भोलाराम जी ने मुहूर्त निर्धारित किया था । दोपहर के 3:30 बजे का ....

जब 10 बजे सो कर उठे तो देखा । वरुण और रमेश पहले ही उठ चुके थे और नाश्ता करके तैयार बैठे थे । हम दोनों भी स्नान आदि कर्मों से निवृत्त होकर नाश्ता करने बैठे ।
नाश्ते के बाद फिर से चौकड़ी मीटिंग पर बैठी । हम लोगों ने वरुण और रमेश से उनके अनुभव के बारे में पूछा । उनके अनुभव भी अद्भुत थे ।

वरुण ने बताना चालू किया - रात में बहुत तेज हवाएं चल रही थी और पेड़ों के गिरने की आवाज भी हम लोगों ने सुनी ... कुल मिलाकर वातावरण बड़ा डरावना हो चुका था । हम लोग मंत्र जाप में लगे हुए थे । 12:30 बजे के आसपास हमारा मंत्र जाप पूरा हो गया था । अंतिम दिन था । इसलिए हम लोगों ने भोग के लिए खोए की जलेबी भी मंगाकर रखी हुई थी ... जाप पूरा होने के तुरंत बाद दरवाजा । अपने आप खुल गया और वही नन्हा बालक फिर से अंदर आया । हम लोगों को एहसास हो गया था कि यह भैरव का बाल स्वरूप है । इसलिए इस बार आते ही हम लोगों ने उनको दंडवत प्रणाम किया ।

बालक खिलखिला कर हंस पड़ा और बोला - जलेबी नहीं खिलाओगे ?

हम लोगों ने तुरंत पात्र को आगे बढ़ाया । उसने दोनों पात्र में रखी हुई जलेबीओं में से 1 - 1 अपने हाथ से उठाया और हमें भी खाने का इशारा किया..

हमने भी जलेबी उठाई और उसे खाने लगे । वह बालक भी सामने बैठकर जलेबी खाता रहा और हमें देखकर मुस्कुराता रहा .....

उसके बाद क्या हुआ कुछ भी पता नहीं .....
जब होश आया तो हम लोग बिस्तर पर थे....
इस प्रकार भगवान भैरव ने हम नौसिखियों को अपना दर्शन प्रदान किया..

पूर्णाहुति का कार्यक्रम

दोपहर को निर्धारित समय पर हवन प्रारंभ हुआ । भोलाराम जी को माइक का बड़ा शौक था । हवन पूजन के दौरान अगर माइक की व्यवस्था सही ना हो तो वह गुस्सा हो जाते थे । उस दिन भी माइक आदि की व्यवस्था थी । बड़े-बड़े 4 पोंगे छत पर लगे हुए थे ....

उनके 2-4 भक्त भी आए हुए थे । जिसमें एक राजनेता था और एक व्यापारी भी था । वे अपने अपने कार्यसिद्धि के लिए आए थे । उन्होने क्रमशः बगलामुखी और त्रिपुर सुंदरी मंत्रों से हवन किया ....

हवन कुंड बनाने के भी अलग अलग तरीके होते हैं । उस दिन त्रिकोणात्मक कुंड बना हुआ था । त्रिकोणात्मक कुंड के एक तरफ भोलाराम जी बैठे थे एक तरफ हम चारों थे और तीसरी तरफ उनके बाकी भक्तगण बैठे हुए थे ...

हवन लगभग ढाई तीन घंटे चला होगा .... इस दौरान उन्होंने दस महाविद्या तथा भैरव मंत्रों से विभिन्न प्रकार

की आहुतियां दिलवाई । हवन सामग्री में भी दशांग के अलावा बहुत सारी चीजें शामिल थी .....

उन्होंने एक फोटोग्राफर बुला रखा था । सबसे विचित्र बात यह थी कि वह फोटोग्राफर वहां बैठे लोगों की कम और हवन कुंड की ज्यादा फोटो ले रहा था । इसका रहस्य उन्होंने बाद में हमें समझाया । फोटोग्राफर के द्वारा ली गई कई फोटो में यज्ञ कुंड से उठती हुई लपटों में विभिन्न आकृतियां दिखाई दे रही थी....
उनमें से कई आकृतियां अस्पष्ट और प्रतीकात्मक लग रही थी । वहीं कुछ आकृतियां देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे वहां पर कुछ हो । एक फोटो में नरमुंड जैसा आकार बना हुआ था । एक फोटो में एक मानव आकृति दिखाई दे रही थी ... जिसको उन्होने हमे दिखाया ....

भोलाराम जी ने बताया था कि भैरव साधना का तेज इतना ज्यादा होता है कि उसके साधक से कोई नजर मिला कर बात नहीं कर सकता है ।

इसका प्रत्यक्ष अनुभव मैंने भी किया । साधना पूर्ण होने के लगभग तीन महीनों तक अगर मैं किसी की आंखों में आंखें डाल देता था तो वह अपने आप नजर झुका लेता था । यह मैंने 10 साल से लेकर 60 साल की आयु वालों पर भी टेस्ट किया । सभी 5 सेकंड से ज्यादा नजर नहीं मिला पाते थे ..... अस्तु ....

इस साधना को करने के बाद अंदर से साहस की भावना जागने लगी थी । यह आभास होने लगा था कि किसी भी प्रकार की जटिल परिस्थिति को बाबा भैरव नाथ संभाल लेंगे ।यह विश्वास भी बेहद प्रभावशाली होता है क्यों कि इससे आप किसी भी कार्य को करने में झिझक महसूस नहीं करते हैं ।

इस साधना के प्रयोग भी कई प्रकार के हो सकते हैं । जो सम्मोहन से लेकर मारण तक सभी प्रकार के तांत्रिक कर्मों में प्रयोग किए जा सकते हैं ।
भैरव साधना में एक साधना स्वर्णाकर्षण भैरव की साधना भी है जिससे आर्थिक लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है ।

कुल मिलाकर इस साधना के लाभ अनगिनत है ।
कलयुग के लिए यह अत्यंत ही उपयोगी साधना है ।
इससे अपने तथा अपने परिवार की सुरक्षा के लिए भी किया जा सकता है ।

भैरव की आकृति बनाकर भी घर के दरवाजों पर लगाई जाती है जो सभी प्रकार की नजर तथा बुरी शक्तियों से रक्षा करती है ...

इसी प्रकार का लाभ तब भी मिलता है जब आप काल भैरव यंत्र को अपने घर के प्रवेश द्वार मे लाल कपड़े मे बांध कर लटकाएँ .....

उस दिन हवन समाप्त होने के बाद , भोलाराम जी ने हमे यह सारी बाते बताई और फिर हम लोग शाम को अपने अपने घर लौट गए...

श्री सदगुरु चरणार्पणम

---- समाप्त ----

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. परेतिन की शादी ।